Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

अप्रैल 2017 (द्वितीय)

गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस
26 अप्रैल 2017

Email : aryapsharyana@yahoo.in

Visit us : www.apsharyana.org

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कि बैठक में आर्य समाज के लिए महाशय धर्मपाल आर्य (एम.डी.एच.) द्वारा किए गए कार्यों के लिए सम्मानित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मा० रामपाल आर्य, मंत्री आचार्य योगेन्द्र आर्य व अनेक राज्यों की प्रतिनिधि सभाओं के मंत्री एवं प्रधान।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118
विक्रम संवत् 2074
दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख पत्रिका

वर्ष 13 अंक 6

सम्पादक :
आचार्य योगेन्द्र आर्य

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल
1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

ओ३म्
आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं
वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

अप्रैल, 2017 (द्वितीय)
16 से 30 अप्रैल, 2017 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय—
ऋषि मिशन का एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व 2
2. शहीदे आज़म पण्डित श्री लेखराम जी- आर्य मुसाफिर-तुम्हें शत-शत नमन 3
3. दृढ़निश्चय और प्रयत्न से ही सफलता सम्भव 5
4. बालकों की चीत्कार 6
5. मानव जीवन : मोक्ष की पाठशाला 7
6. दुरितों के त्रिविध रूप एवं दुरितों से बचने के उपाय 8
7. अन्धकार से प्रकाश की ओर 13
8. नारी नरक या देवीस्वरूप 15
9. विपत्ति को भी नमस्कार 16
10. समाचार-प्रभाग 18

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
aryasabhaharyana@gmail.com

ऋषि-मिशन का एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व

❑ आचार्य योगेन्द्र आर्य, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

एक ऐसी कली जो खिलने से पूर्व तोड़ दी गई, मसली गई, मिट गई, मिट्टी हो गई.....।

न अभी जीवन ले पाई, न जीवन दे पाई।
कितनी आशायें थीं उससे सब धरी रह गई।
माली से पूछो उसके दिल पर क्या बीती?

पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी उस कली की भान्ति थे जो खिलने से पूर्व मुरझा गई। रजत श्वेत एवं शीतल ओस की भान्ति वह सन्तप्त धरा की प्यास बुझाने आए पर क्षण में ओझल हो गए। अमावस्या की घोर निशा में प्रकाशपुंज बनकर आए पर कब उदय हुए, कब चमके, कब छिप गए, पता ही नहीं चला। इतना छोटा था उनका जीवन काल, लोग देखते रह गए। यह धरती उन्हें रहने के योग्य नहीं जँची थी क्या?

यह छोटा-सा जीवन हम सभी आर्यों के लिए प्रेरणा का अविरल स्रोत है। वे गुणों के भण्डार थे। वे थे एक पितृभक्त पुत्र, सहृदय सखा, कुशल खिलाड़ी, सक्रिय छात्र नेता, धुन के धनी, अदम्य उत्साह की मूर्ति, विस्मयोत्पादक स्मरणशक्ति एवं प्रतिभा के स्वामी, अपरिमित ज्ञान के भण्डार, विद्यावारिधि, मनमोहक कवि, योग्य लेखक, गम्भीर दार्शनिक, उत्कृष्ट वैज्ञानिक, कुशल सम्पादक, सफल अध्यापक, सुलझे हुए शिक्षाशास्त्री, ओजस्वी वक्ता, तपस्वी प्रचारक, प्रबल समाज सुधारक, दूरदर्शी नेता, स्वाभिमानी देशभक्त, सच्चे योगी, तपोनिष्ठ मुनि, वेद शास्त्रों के मर्मज्ञ, समर्पित सत्यान्वेषक, परम ऋषिभक्त, ईश्वरानुरागी इन्हीं गुणों के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वे अमिट छाप छोड़ गए।

पण्डित जी में यह गुण किस प्रकार विकसित हुए इसकी भी एक कहानी है। जब पण्डित जी ने ऋषि दयानन्द सरस्वती को इहलीला संवरण करते देखा तो उन पर एक जादू-सा हो गया। वे जितना-जितना ऋषि को समझते गए, उतना ही रंग गहरा होता गया। बस इसी रंग का प्रभाव था कि एक बार पण्डित जी ने दो कपड़ों पर आर्यसमाज के पांच-पांच नियम लिखवा लिए। प्रात:काल जलपान किया, फिर एक कपड़ा आगे लटका लिया, दूसरा पीठ से बांध लिया और चलने लगे ऋषि सन्देश सुनाने के लिए। देवी ने देखा तो विस्मित हो गई। हाथ पकड़ बोली—"पतिदेव! यह क्या हाल बनाया है? क्या कहेंगे लोग?" उत्तर मिला—"भोली! तू नहीं जानती। अब यह जीवन मेरा नहीं रहा। मैं इसे ऋषि के चरणों में अर्पित कर आया हूँ। अब रोम-रोम उनकी धरोहर है, देवी! कोई क्या कहेगा-इसकी चिन्ता कैसी?"

इस घटना से हम आर्यजन संकल्प लें कि हमने भी यदि ऋषि मिशन के लिए अपना जीवन पण्डित जी की तरह नहीं दिया तो आर्यसमाज व उसका मिशन अधूरा होगा। आज आवश्यकता है प्रत्येक व्यक्ति को अपनी दिनचर्या से घण्टा दो घण्टा सामर्थ्यानुसार आर्यसमाज के प्रचार के लिए अवश्य दें। मैं निवेदन करता हूँ कि पण्डित गुरुदत्त जी की जयन्ती पर आप पण्डित जी का जीवन चरित्र अपने घर पर खरीदकर ले आयें तथा सम्पूर्ण परिवार बैठकर उसका स्वाध्याय करें जिससे पण्डित जी के जीवन के संस्कार आपकी युवापीढ़ी में आने शुरू होंगे। हम सभी ऋषिमिशन के राही बनने के लिए अधिक से अधिक गाँव में आर्यसमाज बनायें तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से जुड़कर आर्यसमाज की पताका को हर घर पर फहरायें। पण्डित जी के पिता का नाम लाला रामकृष्ण था। पंजाब शिक्षा विभाग में अध्यापक थे। माता का नाम रूपवती था। माता जी शिक्षित नहीं थीं। पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल 1864 ई० मंगलवार को मुलतान में दिल्ली दरवाजा के अन्दर मातरां वाला मोहल्ला में हुआ।

जब शरीर में रोग होता है तब एक परिणाम आता है कि व्यक्ति की रुचि, मन ईश्वर से हटकर शरीर में लग जाता है।

शहीदे आज़म पण्डित श्री लेखराम जी आर्य मुसाफिर - तुम्हें शत-शत नमन

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

पुत्र शोक जिसने दशरथ को मरते देखा,
पुत्र शोक मानव की कोमलतम रेखा।
छोड़ सके न प्रताप भी जिस ममता को,
धन्य-धन्य ऐ लेखराम तू जीत गया उस ममता को॥

गम्भीर से गम्भीर विषयों को सरल भाषा में व्यक्त करते थे-पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति जी आर्य मुसाफिर के सम्बन्ध में एक संस्मरण बताते हैं कि एक बार कुछ विद्यार्थियों ने पूछा, ''मन का लक्षण क्या है ?'' पण्डित जी का उत्तर ऐसा था कि पण्डित इन्द्र जी जीवन पर्यन्त उसे भूल न सके। पण्डित लेखराम ने उत्तर दिया, ''मन उल्लू का पट्ठा है। यदि इसे काबू में रखो तो बड़े से बड़ा अनर्थ कर सकता है।'' सारे विद्यार्थी हँस पड़े। पण्डित लेखराम जी ने आगे कहा, ''मन को मन से लगाओ, मन को सुमन बनाओ। यह मन इधर-उधर घूमता है। सन्ध्या, भजन, जप में कम लगता है। मन की चंचलता तब तक दूर न होगी जब तक मन में दृढ़ और शिवसंकल्प नहीं होते। इसलिए वेदों में ईश्वर कृपा की प्रार्थना करते हुए प्रभु को पुकारा जाता है कि हे प्रभु! मेरा मन शिव-संकल्प वाला हो।''

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु॥

गम्भीर से गम्भीर विषयों को सरल भाषा में व्यक्त करना पण्डित लेखराम जी का ही कमाल था।

प्रधान जी! मैं पहले पहुँच गया-आर्यसमाज रोपड़ के वार्षिकोत्सव से जुड़ी एक हृदयस्पर्शी घटना यहाँ दी जा रही है। महात्मा मुंशीराम जी अपने छोटे पुत्र इन्द्र को लेकर रोपड़ के वार्षिकोत्सव में गये। ज्यों ही नाव किनारे पर पहुँची तो पण्डित लेखराम जी नाव से पहले उतर गये और महात्मा मुंशीराम जी से मजाक करते हुए कहा, ''प्रधान जी! देख लीजिए, मैं आपसे पहले यहाँ पहुँच गया। महात्मा जी ने सहज भाव से उत्तर दिया कि आपको तो पहले ही पहुँचना चाहिये, क्योंकि आप तो आर्य मुसाफिर हैं।''

पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति ने लिखा है कि आर्यसमाज के इन दोनों बलिदानियों का यह वार्तालाप भविष्यवाणियों से कैसा भरा हुआ था। दोनों एक ही पथ के पथिक थे और दोनों एक ही डगर से होकर इस संसार से विदा हुए। पंडित लेखराम जी की गति तीव्र थी। वे शीघ्रातिशीघ्र मार्ग तय कर लेते थे। महात्मा मुंशीराम जी के स्वभाव में ठहराव था, इसलिए मार्ग पर देर तक चलते रहे। परन्तु दोनों मित्र बलिदान के द्वार से होकर विश्रान्ति स्थान पर पहुंचे। वीर लेखराम जी ने रोपड़ में जो बात मजाक में कही थी कि मैं आपसे पहले पहुँच गया, वह भविष्यवाणी सही सिद्ध हुई। दोनों मित्रों में सेवा, त्याग, आत्मोत्सर्ग और बलिदान की एक होड़-सी लगी थी। लेखराम इससे आगे निकल गये। मुंशीराम जी ने भी मित्रता पूरी-पूरी निभाई। वे भी एक के बाद दूसरी अग्नि परीक्षा देकर वीरगति पाकर पण्डित वीर लेखराम जी के साथ जा मिले।

अन्दर का उजलापन चाहिए-महात्मा मुंशीराम जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान थे। पंडित जी प्रचार से लौटकर जालन्धर आये तो किसी और स्थान पर प्रचार के लिए जाना आवश्यक था। आपके कपड़े मैले थे। दो जोड़े ही साथ रखते थे। सर्दी भी निकट आ गई थी। महात्मा मुंशीराम जी से एक धुला हुआ कुर्ता मांगा। सर्दी से बचने के लिए धुला हुआ कुर्ता नीचे पहनकर ऊपर अपना मैला कुर्ता पहन लिया। यह क्या? उजला नीचे और मैला ऊपर। पण्डित जी से जब इसका कारण पूछा गया तो पण्डित जी ने कहा, ''मैला कुर्ता तन के साथ नहीं लगना चाहिए, इससे शरीर अस्वस्थ होगा। भीतर का कुर्ता उजला होना चाहिए तो हानि नहीं होगी।'' लोगों को भले ही अच्छा न लगे, परन्तु पण्डित जी को तो अन्दर के उजाले की चिन्ता थी, बाहर के दिखावे की नहीं। यही उनके बड़प्पन का रहस्य एवं वैज्ञानिक चिन्तन था।

त्याग की प्रतिमूर्ति-महात्मा मुंशीराम जी लिखते हैं, ''आर्य पथिक सभा से केवल वही मार्ग व्यय लिया करते थे जो उनका वास्तव में व्यय होता था, उससे ऊपर कभी नहीं लेते थे। इक्का, गाड़ी और तांगे आदि का व्यय उस स्थिति में लेते थे, जहाँ सामान, बिस्तर आदि उठाकर पैदल नहीं पहुँच सकते थे।'' एक बार सभा के कार्य से उन्हें कहीं भेजा गया किन्तु उन्होंने केवल एक तरफ का मार्गव्य य

बिल में पेश किया। पूछने पर पण्डित जी ने बताया कि ''वहाँ पर वह अपना निजी कार्य भी करने आये हैं, इसलिए एक ही तरफ का किराया बिल में दर्शाया गया है। ऐसे धर्मपरायण और ईमानदार प्रचारक कहाँ मिलते हैं।'' महात्मा मुंशीराम जी उन्हें इसलिए 'सत्त्वगुणी ब्राह्मण' कहा करते थे। आज के प्रचारकों एवं अन्य कर्मचारियों को लेखराम जी के जीवन से त्याग का यह गुण ग्रहण करना चाहिए।

सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं करते थे-आर्यसमाज के सिद्धान्तों के आगे कई बार बड़े-बड़े उपदेशक भी गिर जाते हैं, किन्तु पण्डित जी के जीवन में ऐसा कोई अवसर नहीं आया कि उन्होंने आर्य सिद्धान्तों से समझौता किया हो। एक बार उन्हें नियोग की प्रथा समझ में नहीं आई, उन्होंने इसके पक्ष में मुंह नहीं खोला। जब एक बार नियोग का ज्ञान पा लिया तो इस विषय के सर्वोत्तम वक्ता बन गये एवं इस विषय का पुस्तक लिखकर इसका मण्डन भी किया।

जानकारी सभी मतों की लेनी चाहिए-बचपन से ही पण्डित जी गीता, अद्वैतमत व कुरान भी पढ़ते थे। वे सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सर्वदा तत्पर रहते थे। एक सुन्दर घटना उनके परम मित्र महत्ता कृपाराम जी ने लिखी है, जो यहाँ वर्णन करने योग्य है। वे लिखते हैं कि मैंने एक बार पण्डित जी से पूछा, ''आप मुहम्मदी पुस्तकों का गहन अध्ययन करते हैं, यदि यह मत आपको अच्छा लगे तो क्या आप मुसलमान बन जाओगे?'' उन्होंने तपाक से उत्तर दिया, ''बेशक! यदि दस घड़े रखे हों और यह मालूम न हो कि ठण्डा पानी किसमें है तो जब तक थोड़ा-थोड़ा पानी सब घड़ों से न पिया जाये, तब तक कैसे पता लग सकता है कि किस घड़े का पानी ठण्डा है? ठीक इसी प्रकार, जब तक सब मतों की धार्मिक पुस्तकों का रस चखा न जाये, उनको भली प्रकार पढ़कर उनकी समीक्षा न की जाए। तब तक उनकी वास्तविकता एवं सत्यता का पता नहीं लगता।'' यह थी उनकी पैनी दृष्टि।

वेद आसमान से नहीं उतरे-आर्यसमाज कहूटा के वार्षिकोत्सव में कुछ बहिनें गा रही थी, ''अर्शे (आसमान से) उतरियाँ चार किताबां (वेद)।'' पण्डित जी ने तुरन्त यह भजन बन्द करवा दिया क्योंकि यह भजन आर्य सिद्धान्तों से मेल नहीं खाता था। उपस्थित लोगों को उपदेश दिया-चार किताबां (वेद) आसमान से नहीं उतरे थे, वेद का ज्ञान सर्वप्रथम ऋषियों के हृदय में प्रकट हुआ था। चार ऋषियों से यह ज्ञान एक ऋषि से दूसरे ऋषि तक आगे चलता रहा। जब लेखन का कार्य सृष्टि में प्रारम्भ हुआ तो चार वेद लिखित रूप में सामने आये। यह ईश्वरीय ज्ञान ऋषियों द्वारा मानवता के कल्याण के लिए सदैव प्रसारित होता रहा।

अमृत का स्रोत केवल वेद-मार्च 1896 में आप पण्डित कृपाराम जी के साथ आर्यसमाज अजमेर के उत्सव में सम्मिलित हुए। यह आपकी ऋषि दयानन्द की भूमि अजमेर की अन्तिम यात्रा थी। 'अमृत का स्रोत' विषय पर आपका बहुत प्रभावशाली भाषण हुआ। आपने युक्तियों व प्रमाणों से सिद्ध किया कि अमृत का स्रोत केवल प्रभु का नित्य ज्ञान वेद ही है। जोधपुर के सर प्रतापसिंह के दो व्यक्ति विघ्न डालने आये थे। जब पण्डित जी व्याख्यान देने पहुँचे तो वहाँ जनसमूह ने करतल ध्वनि से आपका स्वागत किया। उन दोनों विघ्नकारों का साहस ऐसी स्थिति को देखकर टूट गया।

अद्भुत सूझबूझ का स्वामी-एक बार पण्डित जी अपने परिवार के साथ जम्मू का रघुनाथ मन्दिर देखने गये। इस मन्दिर में बहुत-सी मूर्तियाँ, कंकर, शंकर रखे हुए हैं। कहा जाता है कि इनकी संख्या 33 करोड़ है। संख्या की पड़ताल किसने की है? पण्डित जी ने पुजारी से पूछा, ''इन्हें भोग भी लगाते हो क्या?'' पुजारी ने बताया, ''जी हाँ, देवमूर्तियों को नित्य भोग लगाया जाता है।'' पुजारी ने कई अच्छे-अच्छे पदार्थ गिनते हुए कहा कि इन-इन पदार्थों का भोग लगाया जाता है। पण्डित जी ने वराह की ओर इशारा करते हुए कहा, ''इस वराह (सूअर) को किस पदार्थ का भोग लगाते हो?'' इस प्रश्न को सुनकर पुजारी बड़ा लज्जित हुआ कि अब क्या कहे और क्या न कहे? वराह अवतार के प्रिय भोजन (विष्ठा) को तो कोई मनुष्य देखना व छूना भी ठीक नहीं समझता। जुलाई 1890 में पण्डित जी जलालपुर भटियां (गुजरां वाला) गये। वहाँ शास्त्रार्थ करने के लिए पौराणिकों ने एक पत्र लिखा। पौराणिक पण्डित श्री प्रीतमदेव जी ने मूर्तिपूजा के पक्ष को सिद्ध करने के लिए यजुर्वेद 32/31 का यह मंत्र रखा—

न तस्य प्रतिमाऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः।
हिरण्यगर्भऽत्येष मा मा हिꣳसीदित्येषा यस्मान्नजात इत्येषः॥

क्रमशः अगले अंक में......

व्यक्ति जब किसी पदार्थ को अनित्य देखने लगता है तब वहीं से पदार्थ के प्रति उसका प्यार समाप्त होने लगता है।

दृढ़निश्चय और प्रयत्न से ही सफलता सम्भव

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला मो० 9814881501

मनुष्यों को योग्य है कि समदर्शी परोपकारी आप्त (सत्यवक्ता लोग) पुरुषों के समान दृढ़चित्त होकर परस्पर प्रेम भाव, सेवा भाव से पृथिवी पर अन्नादि के लाभ से बल वृद्धि करें। जैसे ईश्वर नियम से दृढ़ होकर आकाश में अनेक तत्त्व ठहरे हैं, वैसे ही मनुष्य दृढ़ निश्चय करके विचारपूर्वक पूर्वजों के समान प्रयत्न से पराक्रम से उन्नति करे और कठिन से कठिन कार्यों में सफलता प्राप्त करे, ऐसा ईश्वर का उपदेश है, अर्थात् ईश्वर की आज्ञा का पालन है।

जैसे पृथिवी को दिन और रात अपने गुणों से उपजाऊ बनाते हैं और सूर्य अपने आकर्षण, प्रकाश और वृष्टि आदि कर्म से स्थिर रखता है। पृथिवी पर सत्यवक्ता अर्थात् यथार्थ वक्ता, सत्यकर्मा, यथार्थज्ञाता पुरुष अपने पुरुषार्थ से पुरुषार्थ कार्य करते हैं, वैसे ही दृढ़निश्चय करके सभी को पृथिवी को उपयोगी बनाकर अपना व अन्य का हित करना चाहिए और कर्मकुशल लोगों के समान अपना कर्त्तव्य पूरा करके संसार में दृढ़ कीर्ति स्थापित करें। जो मनुष्य पृथिवी पर उत्पन्न होकर उद्योग (पुरुषार्थ) करते हैं, वे सूर्य की भांति दृढ़ निश्चल होकर सब प्राणियों की रक्षा करते हैं। पुरुषार्थी पुरुष ही अपने प्रयत्नों के साथ पृथिवी पर सबसे मिलकर नीतिविद्या, भूगर्भ विद्या, भूतल विद्या और मेघ विद्या आदि में निपुण होकर पृथिवी को उपकारी और सुखदायक बनाकर सबको लाभ पहुंचाते हैं।

ईश्वर का पुरुषार्थ-ईश्वर नियम से पृथिवी का अग्निताप आदि पदार्थों और प्राणियों में प्रवेश करके उनमें बढ़ने तथा पुष्ट होने का सामर्थ्य देता है। यह अग्निताप भूमि में सूर्य से आता है और सूर्य में ताप उस परमपिता परमेश्वर से आता है। सूर्य के प्रकाश आकाश के पदार्थों में प्रवेश करके उन्हें बलयुक्त बनाता है। उसी अग्नि से मनुष्य आदि प्राणी भोजन पका कर शरीर को पुष्ट व बलवान करते हैं। उसी अग्नि को हवन (हव्य पदार्थों) में घी, सामग्री आदि पदार्थों से प्रज्वलित करके मनुष्य वायु, जल और अन्न आदि को शुद्ध एवं निर्दोष करते हैं। जैसे भूमि भीतर और बाहर सूर्य ताप से बल पाकर ईश्वर नियम से अपने मार्ग पर निर्विघ्न होकर निरन्तर चलती रहती है, वैसे ही मनुष्य को अपने भीतरी और बाहरी विकारों को सत्य के ताप से निर्दोष अर्थात् शुद्ध करके निरन्तर सुमार्ग पर चलते रहना चाहिए। जैसे इस पृथ्वी पर ईश्वर ने सब प्राणियों के उपकार के लिए फल, फूल, पत्र, वृक्ष, अन्न औषधि आदि उत्पन्न किए हैं वैसे हम इन पदार्थों से यथायोग्य खोज करके अनेक प्रकार के उपकारी खाद्य पदार्थ तैयार करें, रोग निवारण के लिए खोज कर औषधियां तैयार करें और सबको स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट रखने का परोपकारी कार्य ईश्वर की भांति सब करें।

देखिये—पृथिवी का आश्रय लेकर संसार के सब देहधारी मनुष्य आदि सब प्राणी स्थित हैं और इसी प्रकार से अन्तरिक्ष में तारागण आदि सब लोक स्थित हैं। वैसे ही मनुष्यों को सब प्रकार से दृढ़ निश्चय करके परोपकारी भावना से सब कार्य सिद्ध करने चाहिएं। पृथिवी पर अनेक छोटे-बड़े पदार्थ हैं, जैसे पहाड़, ऊँची-ऊँची हिम शिखा की चोटियां, विशाल समुद्र, नदियां आदि। अनेक छोटे-छोटे पदार्थ और अनेक पदार्थ सोना, चांदी, पीतल, लोहा, जिंक आदि एवं अनेक रत्न भरे पड़े हैं। पृथिवी इन सबका स्वयं उपभोग नहीं करती और न ही इनकी परमपिता परमात्मा को आवश्यकता है, बल्कि परमात्मा ने तो ये सब पदार्थ मनुष्यों के सुख भोग के लिए दान में दे रखे हैं, ये क्या परमात्मा का कम परोपकार है? यह महर्षि दयानन्द के वचन हैं। इन पदार्थों का उपभोग केवल मनुष्य करता है अन्य जीवों को तो इनका ज्ञान ही नहीं है। मनुष्य दृढ़निश्चय करके ऐसा प्रयत्न करे कि विद्या बल पूर्वक ईश्वर की अद्भुत रचनाओं से सदा उत्तम क्रियायें करते रहें। जैसे सूर्य प्रकाश आदि से सबका उपकार करता है। निःस्वार्थ भाव से कार्य करें।

जैसे गोमाता अपना दूध स्वयं नहीं पीती, दूसरों के उपकार के लिए अल्प मूल्य तृण-घास आदि खाकर बहुमूल्य दूध देती है। वैसे ही मनुष्यों को परिश्रम से अनेक विद्यायें और उनके गुण प्राप्त करके अन्वेषण करें और पृथिवी में छिपे रत्नों, स्वर्ण तथा अन्य अनेक पदार्थों को पाकर धनवान होवें और प्रसन्नचित्त होकर उनसे दूसरों को भी लाभ पहुँचायें। पृथिवी अपने धारण आकर्षण से सब पदार्थों को अपने पास रखती है और सूर्य के सम्मुख चलने से जल आकाश में चढ़ता है और मेघ के रूप में स्थिर रहता है। जब मेघ बरसता है तो पृथिवी पर अन्न, औषधि आदि उत्पन्न होते हैं जो मनुष्य के स्वास्थ्यवर्धक एवं आरोग्य रहने के लिए ईश्वर की सामर्थ्य से सबको उपयोगी होते हैं।

ईश्वर नियम से जिस प्रकार दिन रात्रि मिले हुए हैं और पृथिवी मेघमण्डल में छाई है, वैसे ही मनुष्य प्रयत्नशील

होकर पृथिवी पर उत्तम बुद्धि के साथ रहकर संसार में अपनी कीर्ति बढ़ाकर ऐश्वर्य को प्राप्त करें।

इस पृथिवी पर जिन अभिमानियों ने अत्याचार किये, दुष्टाचार करके मस्तक उठाया है, वे ईश्वर नियम से सदा नष्ट हुए हैं। जो मनुष्य परमात्मा का आश्रय लेकर अपना दृढ़ निश्चय करके अपना कर्त्तव्य पालन करते हैं, वे कभी भी दुष्टाचार, अनाचार आदि नहीं करते और न ही दुष्टों के फन्दों में फंसते हैं। जो परमात्मा को अपने भीतर बाहर व्यापक मानकर कर्म करते हैं वे कभी दुष्ट कर्म कर ही नहीं सकते।

परमेश्वर ने सृष्टि नियम सब प्राणियों के लिए हितकारी बनाये हैं। उनसे विरुद्धगामी पुरुष मृगतृष्णा में फँसकर सदैव दु:ख पाते हैं और जो लोग ईश्वर नियम पर चलते हैं, वे ही सदा सुख पाते हैं और दुष्ट कर्मों से दूर रहते हैं। स्त्री-पुरुषों को चाहिए कि परमात्मा में श्रद्धा रखकर शुभ कार्यों को करते जायें और परमात्मा में पूर्ण विश्वास करके परस्पर प्रीति से ज्ञान की वृद्धि और रक्षा करें।

स्त्री-पुरुषों की आकृति एक-दूसरे से भिन्न है, परन्तु परमेश्वर ने शक्ति समान दी है। जो स्त्रियां दृढ़ निश्चय करके किसी कार्य को करती हैं, वह अवश्य सफलता को प्राप्त होती हैं। इस देश में कितनी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगनायें हुई हैं और अब भी बहुत कर्मठ, साहसी, प्रयत्नशील, दृढ़निश्चयी, परमेश्वर में श्रद्धा-विश्वास रखने वाली हैं। मनुष्य से किसी कार्य में कम नहीं हैं और जिनमें आत्मविश्वास न हो परमेश्वर में श्रद्धा-विश्वास न हो वह पुरुष हो या स्त्री वह कुछ नहीं कर सकते और सदा ही अपने भाग्य को कोसते रहते हैं या ईश्वर को बुरा-भला कहते रहते हैं और दुष्कर्मों के फल का भाण्डा ईश्वर के सिर पर फोड़ देते हैं। जैसे हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों, महापुरुषों ने दृढ़निश्चय से बाहर-भीतर शुद्ध होकर संसार को शुद्ध बनाने का प्रयत्न किया है। जैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने जीवनकाल में ज्ञान को प्राप्त कर दूसरों को परोपकार भावना से उस ईश्वरीय वेदज्ञान से अवगत कराया उसी प्रकार सब को वर्तना चाहिए।

देखिये-जरा अपनी बुद्धि से सोच-विचारकर अच्छे-बुरे, पाप-पुण्य का ज्ञान प्राप्त कर सभी शुभ कर्मों को करते जायें। जैसे जल अग्नि के संयोग से खौलने लगता है अथवा जैसे पत्नी ऋतुकाल में पति को प्राप्त होकर अभीष्ट सन्तान उत्पन्न करती है, वैसे ही सब मनुष्यों को दृढ़निश्चय करके ईश्वर में श्रद्धा और विश्वास करके पुरुषार्थ के साथ अपना अभीष्ट सिद्ध करना चाहिए। यही तो ईश्वर नियम का पालन है।

बालकों की चीत्कार

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

जिस राजा के राज्य में अपहृत बालक चीत्कार करते हैं, उस राजा को मृत के समान समझना चाहिए। वैदिक राजा के अभाव में हम चाहे किसी की प्रशंसा करें, लेकिन उपरोक्त प्रसंग के संदर्भ में तो हमारे राजा मृतक के समान ही हैं। अभी पिछले दिनों उचाना की माननीय विधायिका श्रीमती प्रेमलता ने हरयाणा विधानसभा में बालकों के अपहरण का विषय उठाया। यह तो स्पष्ट है कि ऋषियों के देश भारतवर्ष में आज बालकों के अपहरण होते हैं। अपहृत बालकों के अंग-भंग करके भीख मंगवाई जाती है, देहव्यापार में बालकों को धकेलते हैं। कुछ वर्ष पहले का निठारी काण्ड भी संवेदनहीनता के कारण भूल बैठे। पूरे देश में खबर फैली थी कि वहाँ बालकों के साथ दुष्कर्म करने के बाद हत्या करके उनका मांस तक खा लिया जाता था। नौकर द्वारा सारा मामला अपने सिर लेने से अनेक सफेदपोश व खाकीपोश बच गए। जिनकी बालकों से दुष्कर्म करने की पैशाचिक वृत्ति बन गई होगी वे अब भी कहीं न कहीं हैवानियत से मानवता को नोंच रहे होंगे। कहते हैं इसी विषय पर किसी हिन्दी फिल्मकार ने फिल्म बनाई थी, शायद नाम था-'पेज-3'। जहाँ ऐसे पाप बढ़ जाते हैं, उन्हें देखकर ही संवेदनशील लोग कह उठते हैं-"आह! परमात्मा यह धरती कैसे टिकी हुई है?"

वैदिक राजा के राज्य में तो यह राजनियम होता कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई भी अपने लड़के और लड़कियों को घर में रख सकें, पाठशाला में अवश्य भेजें। जो न भेजे वह दण्डनीय होता। ऐसा नियम होने पर कहाँ से कोई बालक भिखारी होता?

दण्ड व्यवस्था ठीक होती तो कैसे न्यायिक परिसर, थाना आदि के बाहर ही बालक भीख मांगते। इन बालकों के इस हाल में होते हुए अनाथालयों, मुफ्त शिक्षा, बाल कल्याण जैसे संगठनों का क्या औचित्य?

श्रीकृष्ण जैसे राजा जरासंध की कैद से राजाओं को छुड़ाया, आज हम मासूम बालकों को नहीं छुड़ा पा रहे। जिनके बालक बिछुड़ गए उन माँ-बाप का दु:ख लेकर व उन बालकों की चीत्कार के बीच यह देश जी रहा है। यह भी क्या जीने में जीना है?

आर्यसमाज भी इस दिशा में काम कर सकता है प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति को पत्र लिखकर। भीख मांगने वाले बालकों को कापी, पैन देकर उनके चित्र खींचकर नेताओं व प्रशासन को भेजकर आन्दोलन चलाया जा सकता है। संवेदना कहाँ है?

ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव, शक्ति, सामर्थ्य, सहायता के बिना हम एक सेकेंड भी जीवित नहीं रह सकते।

मानव जीवन : मोक्ष की पाठशाला

—नरेन्द्र आहूजा 'विवेक', 602 जी.एच. 53, सैक्टर-20 पंचकूला

जिस प्रकार किसी पाठशाला में दाखिला लेकर एक विद्यार्थी अपने निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ता हुआ इस उद्देश्य से शिक्षा ग्रहण करता है कि वह उस कक्षा में उत्तीर्ण होकर अंततः उस विद्यालय की अन्तिम डिग्री को प्राप्त कर ले ताकि उसके उपरान्त वह आगामी शिक्षा के लिए आगे किसी महाविद्यालय में दाखिला ले सके। ठीक उसी प्रकार मनुष्य के रूप में जन्म लेकर एक बालक मोक्ष की पाठशाला में दाखिला लेता है।

जैसे विद्यालय में दाखिला लेने से पूर्व कुछ मूलभूत तैयारी अर्थात् बस्ता किताबें साधन होने चाहियें ठीक उसी प्रकार मनुष्य के रूप में जन्म लेकर इस दुनिया की मोक्ष की पाठशाला में दाखिला केवल परमपिता परमेश्वर न्यायकर्त्ता द्वारा हमारे पूर्व जन्मों के फलों के आधार पर एक अनमोल तन अनुपम साधन मनुष्य शरीर के रूप में दिया जाता है। बिना जन्म के मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए जन्म पुनः जन्म एक लम्बी कड़ी के रूप में लेने पड़ते हैं। जैसे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए एक-एक वर्ष में एक-एक कक्षा में प्रवेश लेकर स्वाध्याय करते हुए परीक्षा देकर परीक्षक द्वारा परीक्षा फल मिलने के उपरान्त ही सीढ़ी दर सीढ़ी उत्तीर्ण होते हुए उच्च डिग्री हासिल होती है। ठीक उसी प्रकार इस विशाल मुक्ति विद्यालय का एक-एक जन्म कक्षाओं के रूप में मिलता है। यह जीवात्मा देही या रथी ईश्वर प्रदत्त सर्वोत्तम साधन मानव शरीर का उपयोग वा उपभोग अपने लक्ष्य की प्राप्ति अर्थात् मुमुक्षुत्व के लिए करना चाहती है। अब प्रश्न उठता है कि हमें अगली कक्षा में पूर्व कक्षाओं का पढ़ा हुआ आधार मिलता है। ठीक उसी प्रकार ईश्वरीय न्यायव्यवस्था के अन्तर्गत कर्मफल सिद्धान्त में बाकी सभी एकत्रित किए हुए भौतिक सुख-सुविधाओं के साधन पीछे छूट जाते हैं। लेकिन हमारे किए हुए कर्म संस्कार रूप में ठीक उसी प्रकार साथ जाते हैं जैसे पिछली कक्षाओं में पढ़ा हुआ ज्ञान। और फिर जैसे हम अपनी वांछित डिग्री को प्राप्त करते हैं वैसे ही मानव जीवन के उद्देश्य अर्थात् मोक्ष को भी प्राप्त कर सकते हैं। जीव, देही, रथी की नित्यता गीता के प्रसिद्ध श्लोक '**नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि, नैनं दहति पावकः**' से स्पष्ट है अर्थात् यह जीवात्मा अजर-अमर अविनाशी है जो ना मरता है, ना गलता है, ना जलता है। परन्तु गीता में योगेश्वर श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कर दिया '**वासांसि जीर्णानि यथा विहाय**' यानि जीव चोला बदलता रहता है। जीर्ण शीर्ण होने पर जीव मानव चोले को बदल सकता है। यह साधन मनुष्य का शरीर जो अग्नि, जल, वायु, आकाश और पृथ्वी इन पांच तत्त्वों के संयोग से बना पुनः विभक्त होकर इन्हीं पांचों तत्त्वों में विलीन हो जाता है। साधन अर्थात् जीवात्मा का साधन अर्थात् योनि के तन से संयोग जन्म और वियोग का नाम ही तो मृत्यु है। साधक अर्थात् जीवात्मा का अजर अमर अविनाशी नित्य होना और साधन अर्थात् शरीर का मरणधर्मा अनित्य होना ही इसका मोक्ष की इस महान् पाठशाला में अगली कक्षा में प्रवेश को दिखलाता है।

अब प्रश्न उठता है कि मनुष्य अपने जीवन काल में किस प्रकार के कर्म करे कि वह अपने जीवन के लक्ष्य, उद्देश्य अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करके अपने आत्मा को उस सत्य चेतन आनन्द स्वरूप परमात्मा के आनन्द में निमग्न करके जन्म जाल के बन्धन से लम्बी अवधि के लिए मुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त कर सके। इसके लिए भी योगेश्वर श्रीकृष्ण ने '**यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्**' अर्थात् यज्ञ दान तप आदि कर्म मनुष्य को पवित्र करने वाले हैं। इनको त्यागना नहीं चाहिए। इनके द्वारा ही अभ्यास करते-करते मनुष्य में मोक्ष प्राप्ति की भावना उत्पन्न हो जाती है। वैसे भी गीता में योगेश्वर कृष्ण ने निष्काम भाव से किए गए परोपकार के यज्ञीय कार्यों को सर्वश्रेष्ठ कर्म की संज्ञा दी है।

इस प्रकार मनुष्य जीवन में सांख्य या ज्ञान योग से सत्य ज्ञान प्राप्त कर और उस सत्य ज्ञान को जीवन में धारण करके उसी के अनुरूप कर्म करता हुआ कर्मयोगी बनकर ईश्वर की प्रत्येक आज्ञा अर्थात् अन्तर्यामी ईश्वर के हर सन्देश को सुनकर उसका यथावत् पालन करता हुआ ईश्वर की भक्ति करके जीवन के उद्देश्य अर्थात् मोख को प्राप्त कर सकता है।

जीवात्मा का योग्य मित्र एवं सखा ईश्वर ही है।

दुरितों के त्रिविध रूप एवं दुरितों से बचने के उपाय

—सूबेदार करतारसिंह आर्य सेवक आर्यसमाज गोहाना मण्डी

गतांक से आगे....

(4) वेदों का अभ्यास करने से—वेद परमेश्वर का निर्भ्रान्त ज्ञान है जब व्यक्ति से कोई गलती होती है उसमें मुख्य कारण अज्ञान ही होता है और यथार्थ ज्ञान से एक प्रकाश मिल जाता है। जिसमें अपनी गलती की अनुभूति होने लगती है। जो ज्ञान से धुल जाती है। इसलिए कहा गया है। अर्थात् जैसे अग्नि अपने तेज से अपने समीप रखे ईंधन को तत्काल जलाकर नष्ट कर देती है वैसे ही वेद का ज्ञाता ज्ञानाग्नि से सब पाप भावनाओं को-पाप कर्मों से उत्पन्न संस्कारों को भस्म कर देता है।

(5) आपदग्रस्त दशा में दान करने से—जब व्यक्ति भयंकर व्याधि से अथवा अन्य दैविक आपत्तियों से ग्रस्त हो जाता है, तब परोपकारार्थ दान करने से भी पापों से-दुरितों से-बुरे संस्कारों से बच जाता है।

उपर्युक्त पांच उपाय दुरितों-कुसंस्कारों से बने दुर्व्यसनों से छूटने के लिये ही हैं, न कि कृतकर्मों के शुभाशुभ फलों से मुक्त होने के लिये। दुर्व्यसनों व कुत्सित संस्कारों की जटिलता अथवा व्यक्ति की असमर्थ दशा में परमेश्वर से भी प्रार्थना की जाती है—**दुनितानि परा सुव।**

अमूल्य शिक्षा

1. बहुत ही कम प्रतिज्ञाएं करो।
2. हमेशा सच बोलो।
3. किसी की निन्दा मत करो।
4. अच्छे पुरुषों का साथ करो नहीं तो अकेले रहो।
5. जीवन को नियमित रखो।
6. जुआ मत खेलो।
7. मादक (नशीली) वस्तुओं का सेवन मत करो।
8. उत्तम संग और मधुर भाषण सद्गुणों के स्तम्भ हैं।
9. आमदनी से सदा कम खर्च करो।
10. जहाँ तक हो सके ऋण मत करो।

धर्म-जिस प्रकार धर्म और सम्प्रदाय एक चीज नहीं है, वे भी अलग-अलग हैं। धर्म मनुष्य मात्र को धारण करने वाली सच्चाइयों या नियमों का नाम है और सम्प्रदाय अनेक हैं। मत-पन्थ अनेक हैं, वे मनुष्य समाज को बांटते हैं। राजनीति को स्वच्छ और पवित्र बनाने के लिए धर्म का सहचार आवश्यक है, उसके बिना राजनीति अन्धी है और राजनीति के बिना धर्म लंगड़ा है। परन्तु सम्प्रदाय महाविनाशक और भयावह है। इसलिये राजनीति धर्मसम्मत और पन्थ निरपेक्ष होनी चाहिए। धर्म की भांति मनुष्य मात्र की जाति भी एक है। अत: जातिवाद का प्रश्न ही निरर्थक और बेबुनियाद जबकि वर्णव्यवस्था शुद्ध राष्ट्रीय व्यवस्था से परम आवश्यक है। धर्म पक्षपातरहित न्याय सत्य का ग्रहण असत्य का सर्वथा परित्याग रूप आचार उसी का नाम और इससे विपरीत जो पक्षपातसहित अन्यायाचरण सत्य का त्याग और असत्य का ग्रहण रूप कर्म है उसी को अधर्म कहते हैं।

धर्म का ज्ञान किस प्रकार से होता है—एक तो धर्मात्मा विद्वानों की शिक्षा, दूसरा आत्मा की शुद्धि तथा सत्य को जानने की इच्छा एवं तीसरा परमात्मा की कही वेदविद्या को सत्यासत्य का यथावत् बोध होता है, अन्यथा नहीं।

(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदोक्त धर्मविषय)

धर्म का मर्म सारे जगत् को बता गए।
मृत प्राय:धर्म को ऋषि पुन: जिला गए॥

वेद के अनुसार—सत्य से अधिक दूसरा धन नहीं और झूठ से बढ़कर पाप नहीं, क्योंकि सत्य ही धर्म का आधार है। अत: सत्य का लोप कभी नहीं करना चाहिये। किसी समाज के समुचित संचालन के लिये सबसे अधिक आवश्यक है, 'ईश्वर-विश्वास'। जिस समाज के व्यक्तियों में ईश्वर-विश्वास का अभाव हो जाता है, वह समाज सर्वसम्पन्न होते हुए भी नष्ट हो जाता है। उसमें कुत्सित प्रवृत्तियाँ बढ़ जाती हैं। लोगों को अनाचार से घृणा नहीं रहती। शीघ्र ही अनाचार की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं। ईश्वर से डरने वाले किसी बुराई या बुरे आदमी से नहीं डरते। जो ईश्वर से नहीं डरता वह छोटी-छोटी चीजों से डरता है, क्योंकि वह बुराइयों में शीघ्र फंस जाता है। जिस देश में सारे जगत पर शक्ति रखने वाले ईश्वर पर विश्वास नहीं और अपने अनुभवी वृद्धों पर भी श्रद्धा नहीं, वह राष्ट्र चिरकाल तक जीवित नहीं रह सकता। ईश्वर की शक्ति का उचित प्रयोग तो अनुभवी पुरुष ही कर सकते हैं। बहुत से लोग शक्तिशाली होते हुए भी अनुभवी नहीं होते। वेद कहता है कि ईश्वर की ज्योति उत्तम या उत्कृष्ट है। मिट्टी का दिया एक देव है। गैस का दीपक उससे बड़ा देव है। विद्युत् (बिजली) का दीपक उससे बड़ा देव है। सूर्य और चन्द्र इससे भी बड़े देव हैं, परन्तु सबसे बड़ा देव (महादेव) है ईश्वर, जिसके प्रकाश से समस्त प्रकाश वाले पदार्थ प्रकाशित हो जाते हैं।

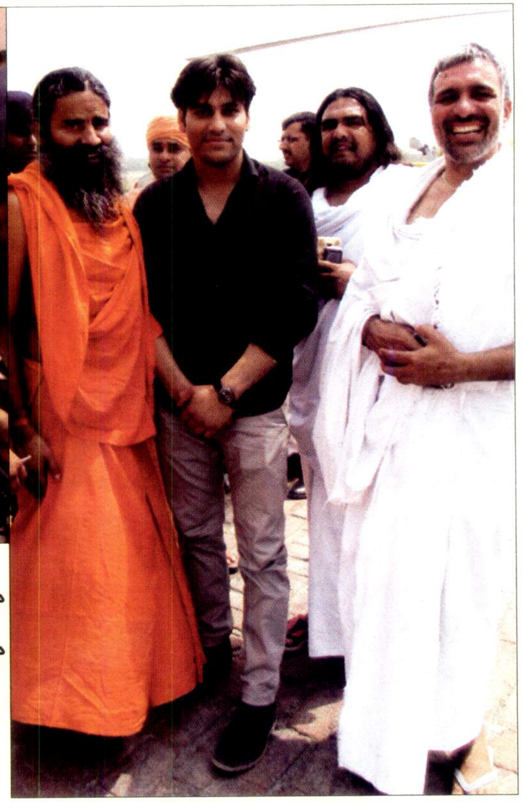

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की गो के प्रति चिंता को स्वामी रामदेव जी के साथ प्रकट करते सभा मंत्री आचार्य योगेन्द्र आर्य व आचार्य आजाद आर्य।

ओ३म ओ३म

प्रवेश सूचना प्रवेश सूचना

स्थापित सन 1986

भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय ट्रस्ट

ग्राम व पोस्ट जसात-123502, तहसील पटौदी, जिला गुरुग्राम (हरि.)

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बंधित

प्रवेश प्रारम्भ कक्षा छठी से

विशेषताएं :

* प्राचीन एवं अर्वाचीन शिक्षा का अनुपम सामंजस्य केन्द्र।
* निःशुल्क शिक्षा।
* अनुभवी एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
* समय-समय पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन।
* संध्या-हवन, योगासन, प्राणायाम, खेल समन्वित नियमित दिनचर्या और धर्म शिक्षा द्वारा संस्कारित वातावरण।
* धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध, यज्ञ वैदिक विधि द्वारा।
* खुला एवं प्रदूषण रहित गुरुकुल प्रांगण।
* Computer शिक्षा की उचित व्यवस्था।
* समय-समय पर नई शिक्षा पद्धति का प्रयोग व मूल्यांकन।
* महर्षि दयानन्द आर्ष पाठ विधि द्वारा निर्दिष्ट शिक्षा।

सम्पर्क सूत्र : 9416188854, 9992068104   e-mail:chauhanravinder79@gmail.com

गोशालाओं को चारे हेतु चैक वितरित करते हुए गोसेवा आयोग हरियाणा के चेयरमैन श्री भानीराम मंगला, आचार्य योगेन्द्र आर्य, आचार्य आजाद सिंह आर्य व गोशालाओं के पदाधिकारी।

आर्य समाज पिंजौर के 39 वां वार्षिक उत्सव में मुख्य वक्ता आचार्य कर्मवीर मेधार्थी।

पूरे प्रदेश में शराबबन्दी लागू करवाने के लिए कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए सभा पदाधिकारी।

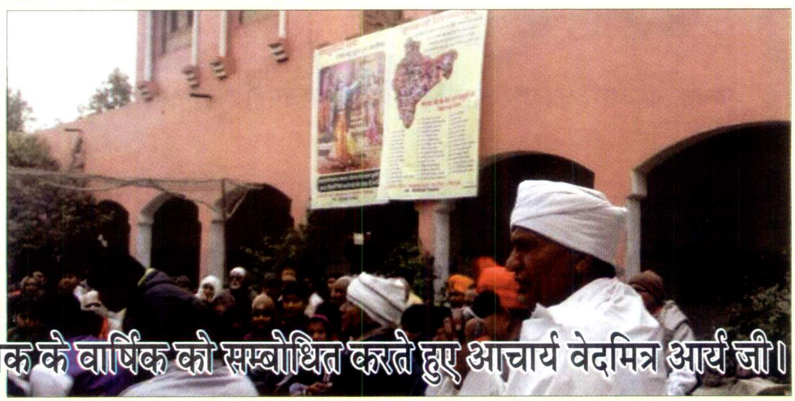

आर्य समाज भाऊ आर्यपुर रोहतक के वार्षिक को सम्बोधित करते हुए आचार्य वेदमित्र आर्य जी।

जिन कर्मों से हमें दुःख मिलता है, दूसरों को भी दुःख मिलता है, वह अशुभ कर्म है।

ओ३म्

सांख्य दर्शन का अध्यापन

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, की शाखा दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक में विगत लगभग देढ़ वर्ष से नियमित रूप से प्रातः यज्ञ, वेदपाठ, वेद प्रवचन, कक्षा के रूप में क्रियात्मक योग, संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण, आर्योछ्देश्यरत्नमाला, व्यवहारभानु, स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश,स्थूल रुपेण योगदर्शन, सांख्यदर्शन व सत्यार्थ प्रकाश आदि ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्यापन कराया जा रहा है। आगे वैशाख कृ. 06/2074 तदनुसार 17 अप्रैल 2017 से स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक के द्वारा स्वामी ब्रह्ममुनि जी कृत संस्कृत भाष्य सहित सांख्य दर्शन का अध्यापन कराया जायेगा। स्वस्थ, समर्थ, अनुशासनप्रिय, विद्या इच्छुक विद्यार्थी तथा नवीन विद्यार्थी प्रवेश के लिए निवेदन व संपर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता

केवल ब्रह्मचारी (पुरुषों) के लिए। आयु 18 वर्ष से अधिक हो।

शैक्षणिक योग्यता

न्यूनतम 12 वीं (शास्त्री व आचार्य श्रेणी को प्राथमिकता)

विशेषताएं

वैदिक दर्शनों के संस्कृत भाष्य सहित अध्यापन के साथ साथ 11 उपनिषद्, महर्षि दयानन्द कृत कुछ ग्रंथ, वेद भाष्य के चुने हुए कुछ अध्याय, संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण, स्वयं के धार्मिक व आध्यात्मिक जीवन के निर्माण हेतु प्रतिदिन ईश्वरोपासना, यज्ञ, वेदपाठ, वेदस्वाध्याय, आत्मनिरीक्षण व निदिध्यासन अभिन्न अंग हैं। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक वैराग्य, मनोनियंत्रण, यम नियम, ध्यान-समाधि आदि सूक्ष्म विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। आध्यात्मिक उन्नति के लिए 4-5 घंटे मौन पालन का अवसर रहेगा।

सुविधाएं

प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपातरहित आवास-भोजन, बिस्तर-वस्त्र, घी-दूध, फल-पुस्तकादि, वस्तुवें निःशुल्क प्राप्त होंगी।

सम्पर्क हेतु पता

आचार्य जी,

दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक (हरियाणा) 124001

चलभाष -

आचार्य नवानन्द जी आर्य - 7027026175, स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक - 7027026176, श्री निगम मुनि जी - 9355674547

अन्धकार से प्रकाश की ओर...

❑ डॉ० बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने आर्यसमाजों की स्थापना कर संसार को श्रेष्ठ बनाने का एक महान् क्रान्तिकारी कार्य किया जिसका उद्देश्य शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना रहा। आज भारत में ही नहीं, अपितु विश्वभर में आर्यसमाज हैं। आर्यसमाजियों ने वेदप्रचार करने व समाज से बुराइयों को समूल नाश करने का दृढ़ संकल्प कर लिया। उधर, देश में अंग्रेजों का शासन था। महर्षि दयानन्द सरस्वती के बाद भारत में सामाजिक क्रान्ति आई। उस समय जनता मान बैठी थी कि अंग्रेजी शासन अब समाप्त नहीं हो सकेगा।

आर्यजन भी चुप बैठने वाले नहीं थे। महर्षि ने जो कार्य किये; उनको आगे बढ़ाने में कोई कमी नहीं छोड़ी। महर्षि ने वेदप्रचार किये, उपदेश किये, शुद्धि को पुनः आरम्भ किया, शास्त्रार्थ व संवाद किये। मत-मतान्तर बढ़ते जा रहे थे उन्हें वेद के विषय में बताया। स्त्री व शूद्रों को वेदज्ञान से दूर रखा जाता था वह यज्ञोपवीत धारण नहीं कर सकते थे। जातिवाद, ऊँच-नीच, छुआछूत चरमसीमा पर थे। बलिप्रथा होती थी। यज्ञों में लोग पशुओं की बलि देते थे, नरबलि तक होती थी। समाज पाखण्डों का घर बन गया था। ऐसे में महर्षि के भक्तजनों, अनुयायियों ने घर-घर में वेदज्ञान की ज्योति का प्रकाश किया।

उस समय आर्यसमाजियों के अन्दर एक लग्न थी, संकल्प था कि धरती पर कहीं पाखण्ड व अन्धविश्वास न रहने देंगे इसके लिए उपदेश, प्रवचन, शास्त्रार्थ, भजन गाकर जनता को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने को प्रेरित करते थे। ग्रामों-नगरों में प्रभातफेरी शोभायात्रायें निकला करती थीं, घर-घर 'ओ३म्' ध्वज लहराते थे, प्रत्येक की जिह्वा पर आर्यसमाजियों के भजन होते थे।

पं० रामचन्द्र देहलवी, महात्मा अमर स्वामी, पं० लेखराम, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, जैसे सहस्त्रों आर्य विद्वानों ने वेदप्रचार व सामाजिक क्रान्ति हेतु अपना जीवन समर्पित कर दिया। उस समय वैदिक विद्वानों के अन्दर एक उत्साह था व समाज के गिरते स्तर अंधविश्वासों व पाखण्डों, असत्य व अन्याय को देखकर एक क्षोभ था। वह चाहते थे कि भारत भूमि से यह अन्धकार जो अज्ञानता का था सदा के लिए मिट जाये। वह ओ३म् ध्वज लेकर कहीं भी डट जाते थे। अनेक मत-मतान्तर वालों से चाहे पौराणिक हों या ईसाई व यवन, जैन, बौद्ध अथवा कोई भी हो, वह सत्य के प्रकाश के लिए शास्त्रार्थ किया करते थे। व्यक्तिगत किसी से विरोध न होता था, सत्य के लिए ही शास्त्रार्थ किया करते थे। उस समय पाकिस्तान भी भारत में ही था। लाहौर, करांची आदि में तो ओ३म् ध्वज बुलन्दियों पर था।

आर्यसमाज के इतिहास, निर्णय के तट पर तथा अनेक विद्वानों द्वारा रचित अनेक पुस्तकों में उनके किये कार्यों का वर्णन है। किस प्रकार से आर्यसमाजी टोलियां बनाकर सुबह से शाम तक दिल्ली से दूर-दूर तक भारत भर में ग्रामों-नगरों में श्वेत कुर्त्ता-धोती-टोपी पहन घूमते-फिरते थे, वेद की दुन्दुभि बजाते फिरते थे। उनके अन्दर एक उत्साह था, लगन थी, श्रद्धा थी, राष्ट्र व समाज से एक प्रेम व लगाव था, वह चाहते थे कि इस देश के लिए क्या से क्या कर दें और इसीलिए पं० लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अनेक आर्य क्रान्ति के योद्धा इस रणक्षेत्र में बलिदानी हो गए। हमारे देश में पहले यवनों ने आक्रमण किये पश्चात् अंग्रेजों ने हमारी भूमि को रौंदा, लूटा व संस्कृति को मिटाने का पूरा प्रयत्न किया। इसका कारण हमारी आपस की फूट थी, राजे-रजवाड़ों में वैमनस्य था, समाज में पाखण्ड व अवैदिक मान्यतायें थीं। लोग वेदज्ञान को भूल गए थे, पाखण्डों व वेदविरुद्ध पुराणों का अनुसरण कर रहे थे। इतना वैभवशाली गौरवशाली भारत जहाँ चक्रवर्ती शासक होते आए थे, संसार के लोग यहां युधिष्ठिर जैसे शासकों के आगे नतमस्तक होते आये थे आज विदेशियों के क्रूर पंजों में जकड़ा हुआ था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसका समाधान वेदज्ञान का प्रचार, अन्धविश्वास व पाखण्डों से प्रजा को दूर करना बताया। दण्डी स्वामी विरजानन्द ने यही दक्षिणा दयानन्द से मांगी थी और इसी से देश पुनः विश्व में गौरवान्वित हो सकता है। आर्य जानते थे कि वेदप्रचार व शास्त्रार्थ एवं शुद्धि ही इसका मार्ग है। निर्णय के तट पर अनेक शास्त्रार्थों का वर्णन है। शास्त्रार्थी अन्य मत-मतान्तर की पुस्तकों का अध्ययन करते थे तथा अनेक विद्वान् कई

भाषाओं को बोलने व पढ़ने वाले भी थे। जब शास्त्रार्थ होते थे उस समय बहुत से लोग आया करते थे और शास्त्रार्थ होते देखा व सुना करते थे।

ऐसे ही थे महात्मा अमर स्वामी जो ग्राम अरनियां जिला बुलन्दशहर के निवासी थे। इसी ग्राम में कुंवर सुखलाल इनके भाई थे जिनकी वाणी को सुनने मैदान में इतनी भीड़ हो जाती थी कि खड़े होने की जगह नहीं मिलती थी। कुंवर सुखलाल जब अपनी मधुर वाणी व क्रान्तिकारी शब्दों की विशेष शैली में बोला करते थे तो यातायात रुक जाते थे, यात्री सुनने को खिंचे चले आते थे। उसी समय महात्मा अमर स्वामी जी के शास्त्रार्थों को देखने-सुनने जनता की भीड़ लग जाया करती थी। उनके शास्त्रार्थों को सुनने को जनता उत्सुक रहती थी। **'निर्णय के तट पर'** पुस्तक में अनेक शास्त्रार्थों का वर्णन है। **'मूर्तिपूजा वेदानुकूल है या वेदविरुद्ध'** इलहामी किताब कौन-सी है वेद या कुरान, मृतक श्राद्ध क्या वेदसम्मत है? जानवरों की कुर्बानी कुरान विरुद्ध है या नहीं आदि शास्त्रार्थ को पढ़कर आर्यों की प्रखर, तेज, ओजस्वी वाणी का पता चलता है। मृतक श्राद्ध के विषय में जब शास्त्रार्थ हुआ तब उसके प्रत्युत्तर में लिखा है—जो मृतक श्राद्ध किया जाता है सो मरे हुए यहाँ खाने को आते हैं या भोजन उनके लिए वहीं पहुंचता है, अगर यहाँ खाने के लिए आते हैं तो—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि ग्रह्णाति नरोपराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि अन्यानि ग्रह्णाति नवानि देहि॥ गीता

उन्होंने कहीं जाकर जन्म ले लिया और आपने उन्हें यहाँ बुला लिया कि आओ हमारे यहाँ भोजन करो तो वे शरीर छोड़ करके आवेंगे या शरीर साथ ले करके आवेंगे। अगर वे शरीर साथ ले करके आवेंगे तो पण्डित जी के साथ में एक और आ गया, न्यौता अकेले पण्डित जी को और साथ आ गया एक और। तो श्राद्ध करने वाले कहेंगे कि ये किसे ले आये? पण्डित कहे कि तुम्हारे बाप को। वह कहेगा बाप होगा तेरा, हमारा बाप काहे को है, हमारा बाप तो मर गया, तो ये किसे ले आये? अभी लड़ाई झगड़ा होने लगेगा। कौन आवेगा? अगर शरीर छोड़कर आवेगा तो वह मर जायेगा, जीवात्मा उसमें से निकलकर आवेगा तो उसके घर में रोना-पीटना पड़ जावेगा फिर उसे भस्म कर देंगे....।' शूद्रों और स्त्रियों को वेद पढ़ने पर रोक थी वह यज्ञोपवीत धारण नहीं कर सकते थे। आर्यसमाज ने यह रोक हटाई और प्राचीनकाल में स्त्रियों और पुरुषों को जो समान अधिकार थे उस पर प्रकाश डाला। आर्यसमाजियों ने पौराणिकों का शस्त्र पौराणिकों पर ही चलाया और पुराणों में लिखा एक श्लोक सुनाया—

कुशसूत्र द्विजातीभ्यांद्राज्ञां कौशेय पटठकम्।
वैश्यानाम् चीरमक्षोभं शूद्राणां शण् बल्कजम्॥
कार्पासं पदमजं चैव सर्वेषां शस्तमीश्वरः।
ब्राह्मण्यां कर्तितं सूत्रं त्रिगुणं त्रिगुणी क्रतम्॥

(गरुड़पुराण अ० 43)

यहाँ चारों वर्णों के लिए यज्ञोपवीत का वर्णन किया गया है। गोभिल गृह्यसूत्र में भी स्त्री को यज्ञोपवीत धारण करने का वर्णन है।

प्रावृतां यज्ञोपवीतिनीवभ्युदानयज्जपते सोमोऽद्दगंधर्वा-येति। पश्चातग्ने संवेष्ठितं पाटमेव जातीयं वाऽन्यत्पदा प्रवर्तयन्ती वाचयेत प्रमेपति यानः पन्था कल्पतामिति स्वयं जपेन॥ (गोभिल गृह्यसूत्र 2.1.19-21)

पुराणों में गप्प व अवैदिक बातें भरी पड़ी हैं, जैसा कि ब्रह्मवैवर्त पुराण कृष्ण जन्म खण्ड अध्याय 105 में दिया है कि रुक्मिणी जी श्रीकृष्ण की बाद में पत्नी बनी थीं उनकी शादी अन्यत्र हो रही थी। उसमें बारात को भोजन कराने के लिए रुक्मिणी के भाई ने यह आदेश दिया था कि एक लाख गायें, दो लाख हिरन, चार लाख खरगोश, दस लाख कछुवे, सोलह-सोलह लाख भेड़ें काटकर पकाई जावें।

पौराणिक पण्डितों के अनुसार रुक्मिणी का परिवार पक्का सनातनधर्मी था। तब पौराणिक पण्डितों पर जिम्मेवारी आती है कि इस कसाई खाने को वैदिक सिद्ध करें। पुराणों में इसी प्रकार की ऊटपटांग बातें भरी पड़ी हैं, जिनको पढ़कर विद्वानों को परेशानी होती है।

शास्त्रार्थों की ओर देखें तो हमें समाज की कुरीतियों, पाखण्डों से लड़ने का बल मिलता है। हमारे आर्यसमाजी विद्वान् तपस्वी किस प्रकार से उन्हें करारा जवाब देते थे और समाज में फैली गन्दगी कुड़े-कबाड़ों को निकाल फेंकते थे। शास्त्रार्थ से अज्ञानरूपी अन्धकार को दूर करने का यही सर्वश्रेष्ठ उपाय था। हमें आर्यसमाज के इतिहास व शास्त्रार्थों पर भी ध्यान देना चाहिए। वेदादि सत्य शास्त्र महर्षि रचित समस्त साहित्य एवं अन्य आर्य विद्वानों के ग्रन्थ व पुस्तकों से संसार को श्रेष्ठ बनाने का ज्ञान मिलता है।

नारी नरक या देवीस्वरूप

—कु० रविता, गोयला कलां (झज्जर)

नारी सत्कार के योग्य मानी जाती है। लेकिन कैसी नारी ? इस विषय को हम दृष्टान्तों से समझते हैं।

एक वेद शास्त्र का विद्वान् है। उसका विवाह एक पौराणिक लड़की से होता है। दूसरी तरफ एक वेदशास्त्र की विदुषी, जिसका विवाह एक पौराणिक लड़के से होता है। तीसरा, लड़का भी विद्वान् है, लड़की भी विदुषी है, दोनों का विवाह उनके गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार होता है। चौथा, दोनों पौराणिक परम्पराओं से ओतप्रोत हैं। उनका भी परस्पर विवाह होता है। अब, जब लड़का उपर्युक्त प्रत्येक स्थिति में लड़की के घर बारात लेकर जाता है, तब लड़की उसके गले में माला डालती है, उसके पैर छूती है। लगभग समाज में ऐसा ही देखने में आता है। लड़का किसी भी लड़की के पैर नहीं छूता। जबकि लड़की पूजनीय होती है। मनुस्मृति में भी कहा गया है—**'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'** अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहीं देवता निवास करते हैं।

आर्यसमाज कहता है कि पति-पत्नी में समानता होनी चाहिए लेकिन होती नहीं है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी पर जब दुःख की घड़ी आती है अर्थात् चौदह वर्ष का वनवास मिलता है, तब सीता उनका साथ देती है। जब दुःख समाप्त हो जाता है और राम राजगद्दी पर बैठते हैं, तब सीता को महल से निकालकर वन में भेज दिया जाता है, क्या यही समानता है ?

आज समाज में क्या हो रहा है ? बहुत से घरों में देखा जाता है कि महिलाएँ घरों को चलाती हैं, वह सारा दिन पूरी मेहनत से काम करती हैं और शाम को जब पतिदेव मदिरादि का पान कर घर पहुंचते हैं और उस बेचारी की पिटाई होती है। इस पिटाई से उसे शारीरिक दुःख पहुँचता है। घर में पैसे का अभाव होने से उसे मानसिक दुःख होता है और समाज में जब ताने सुनते हैं तो सामाजिक दुःख होता है।

अब इधर देखते हैं कि एक व्यक्ति वेदप्रचार करना चाहता है, आर्यसमाज से प्रभावित है। घर में विद्वानों को लाना चाहता है। लेकिन उसकी पत्नी उसका विरोध करती है। घर में किसी को नहीं आने देती अर्थात अतिथि सत्कार नहीं करना चाहती है। कहती है कि पता नहीं कैसे-कैसे व्यक्तियों को लेकर आ जाते हैं। बहुत-सी महिलायें पुरुषों पर झूठे आरोप लगाकर पैसे ऐंठने का कार्य करती हैं। ये नये तरीके के वेश्यालय होते हैं।

अब विषय को थोड़ा आगे बढ़ाते हैं-**'माता निर्माता भवति'** अर्थात् माँ निर्माण करने वाली होती है। बहुत-सी महिलाएँ लाड-प्यार में बच्चों को बिगाड़ने का काम कर रही होती हैं, उन्हें विष पिला रही होती हैं। वे मानती हैं कि वह अपने बच्चों का भला कर रही हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। उन्हें पता नहीं है कि आगे चलकर उनके बच्चे गलत राह पर चलने लगते हैं। इसलिए अन्दर से प्रेम करो और बाहर से उन्हें डाटते रहना चाहिए ताकि वे गलत राह पर न चलें।

अब हमें देखना है कि **'नारी नरक का दरवाजा है'** या **'नारी देवीस्वरूपा'** है। अन्त में एक उदाहरण से स्पष्ट करते हुए अपनी बात को विराम देते हैं-एक वेद बहुत बड़ा विद्वान् है, वेद के अनुकूल आचरण करता है। दूसरा, विद्वान् तो बहुत बड़ा है, लेकिन आचरण नहीं करता। तीसरा, सामान्य व्यक्ति है, लेकिन ईमानदार, सत्यवादी, धार्मिक है और चौथा व्यक्ति जो न ईमानदार न सत्यवादी बल्कि उसमें सारे दोष-दुर्गुण, दुर्व्यसन, दुराचारी हैं।

अब जैसे-पहला और तीसरा पूजनीय है और दूसरा तथा चौथा तिरस्कार के योग्य है, वैसे ही जो नारी वेद के अनुकूल आचरण करती है वही पूजनीय है, चाहे वह माँ, बहन, बेटी, पत्नी किसी भी रिश्ते में हो और जो वेद के विरुद्ध आचरण करती है वह ताडना के योग्य है। जो नारी वेद के अनुकूल आचरण करती है, उसकी पूजा होती है, उस घर में उत्तम सन्तान होती है। वहीं पर राष्ट्रभक्त उत्पन्न होते हैं तथा वहीं पर ऋषि-महात्मा उत्पन्न होते हैं। अतः केवल नारी को नहीं सभी को वेदानुकूल आचरण करना चाहिए। वेद के बिना दुःख ही दुःख है। कितना अच्छा कहा है-दुनिया सारी वेद बिना, दुखिया भारी वेद बिना। वेदना अर्थात् दुःख, जहाँ वेद नहीं है वहाँ दुःख ही दुःख होता है।

जैसे संस्कार प्रबल होते हैं वैसे ही हाव-भाव परिवर्तित होते चले जाते हैं।

विपत्ति को भी नमस्कार

❑ श्रीमती मनीषा विमल, 2/25 आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार मो० 9760618162

सन्त फ्रैंकलिन कहते हैं कि "**अति सुख अच्छा नहीं होता, जीवन में एकाध दुःख तो आना ही चाहिये।**" दुःख से सद्बुद्धि आती है। अति सुख से मनुष्य अहंकारी हो जाता है और उसका पतन हो जाता है। जिस तरह चरपरा खाने के बाद ही मिष्ठान्न का महत्त्व पता चलता है उसी तरह जीवन में दुःख के बाद सुख की अनुभूति होती है तभी उसका महत्त्व पता चलता है। इन दुःखों व बड़ी से बड़ी आपदाओं का भी स्वागत करना चाहिये। वेदमन्त्र में इस बात को समझाया गया है—

ओ३म् नमोऽस्तु ते निऋते तिग्मतेजो, अयस्मान विचृता बन्धनपाशान यमो मह्यम् पुनरित् त्वां ददाति तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे॥ (अथर्व० 6.63.2)

निऋते=हे भारी विपदा, नमोऽस्तु=मैं तुझे नमस्कार करता हूँ। तिग्मतेजः=हे तीक्ष्ण तेजवाली भयंकर आपदाओं, अयस्मयान् बन्धपाशान विचृता=लोहे की बेड़ियों को काट डाल, (क्योंकि) यम=नियमन करने वाले परमात्मा ने, पुनः इत ददाति=तुझे मेरे लिये ही पुनः दिया है। तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे=उस मृत्यु रूप संहारक परमात्मा को मैं फिर भी नमस्कार करता हूँ।

भक्त के कहने का भाव यह है कि ईश्वर की दी भयंकर से भयंकर विपदाओं का मैं स्वागत करता हूँ, क्योंकि इन्हीं के कारण मुझे जीवन का सही अर्थ मालूम हुआ है। इन्हीं के कारण मेरे पूर्वजन्म की लोहे की बेड़ी कट गई है। (पुनर्जन्म के कर्मो का फल इन भीषण आपदाओं के रूप में मिल गया है)। देखा जाये तो इस मन्त्र के द्वारा वेद में मनुष्य को अपनी बुद्धि व कौशल द्वारा बड़ी से बड़ी मुसीबत का साहस व धैर्य पूर्वक सामना करने की प्रेरणा दी है साथ ही ईश्वर पर आस्था व विश्वास के साथ पुरुषार्थ करने की भी।

प्रसिद्ध विचारक मैथ्यू का कहना है कि मानव जीवन में परिस्थितियों का अपना महत्त्व होता है। विशेषकर परिस्थितियों द्वारा दी गई शक्ति। सत्यता से इस बात पर विचार करें तो ज्ञात होगा कि मनुष्य पर जब भी कोई भीषण आपदा आती है तब उसे अन्दर की दिव्य शक्ति का ज्ञान होता है जो उसे साहसी पुरुषार्थी तथा धैर्यवान बना देती है। यद्यपि जीवन संवर जाने पर वह दुर्घटना याद भी नहीं रहती। सभी के जीवन में ऐसी घटनाओं से साक्षात्कार हुआ होगा, किन्तु कभी इन पर विचार नहीं किया। उदाहरण के रूप में एक सत्य घटना बता रही हूँ। यद्यपि इस तरह की अनेक घटनाएं हमारे जीवन में आई होंगी।

लिज्जत पापड़ का नाम आज देशभर में जाना जाता है। यह ऐसी महिला के जीवन की घटना है जिसको छोटी आयु में दुःखों का सामना करना पड़ा। पच्चीस-छब्बीस वर्ष की आयु में पति की अचानक मृत्यु हो गई। चार छोटे-छोटे बच्चे, घर के हालात बहुत खराब। पास-पडोस ने सहायता करके पति का क्रियाकर्म करवा दिया अब समस्या थी बच्चों को पालने की, तबगांव की किसी बड़ी बूढ़ी ने सलाह दी कि तू पापड़ बड़ी बहुत अच्छी बनाती है तू वही बनाकर बेचना शुरू कर दे। गांव वाले सामान देते और वह बड़ी पापड़ बनाकर मेहनताना लेकर किसी प्रकार बच्चों का पालन-पोषण करने लगी। धीरे-धीरे उस महिला के बनाये पापड़ व बड़ी काफी पसन्द किये जाने लगे और गांव के बाहर भी जाने लगे। उसकी हिम्मत, लगन, हुनर व ईश्वर विश्वास ने उसे नया रास्ता दिखा दिया और कुछ ही समय में वह लिज्जत पापड़ पूरे देश में प्रसिद्ध हो गये। वह अपनी कम्पनी में बेसहारा व विधवा महिलाओं को ही काम देकर उन्हें आश्रय देती है।

मनुष्य के पास जब कोई विपदा या मुसीबत आती है तब उससे लड़ने का रास्ता भी स्वतः ही मिल जाता है। बशर्ते वह दृढ़ता व साहस से उनका सामना करने के लिए प्रयत्नशील हो। आपदा या मुसीबत से लड़कर उसे आगे बहुत अच्छा जीवन जीने का मार्ग भी मिलता है। आज के वर्तमान समय में हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी का जीवन बचपन कितने अभावों में बीता किन्तु आज व विश्वप्रसिद्ध साहसी प्रधानमन्त्री के रूप में जाने जाते हैं, इसी तरहके अनेक नाम व घटनायें हैं।

मनुष्य को जीवन में तीन प्रकार के दुःख मिलते हैं—1. आध्यात्मिक, 2. आधिभौतिक, 3. आदिदैविक।

1. आध्यात्मिक दुःख-दो प्रकार के होते हैं। एक शरीरजन्य दूसरे ईश्वरप्रदत्त। शरीरजन्य दुःखों से तात्पर्य है—शारीरिक व्याधियाँ-ईश्वर ने इतना सुन्दर शरीर दिया एक स्वचालित मशीन के रूप में, फिर भी कभी न कभी तो इस मशीन को भी रखरखाव की आवश्यकता होती है और यही व्याधि के रूप में आते हैं। यह सामयिक दुःख होते हैं जो समुचित चिकित्सा से ठीक हो जाते हैं। दूसरे प्रकार के ईश्वरप्रदत्त दुःख होते हैं जैसे अपंग पैदा होना किसी कारणवश नेत्र ज्योति चले जाना, गूंगा-बहरा होना, सन्तान प्राप्त न होना, युवावस्था में पुत्र की मृत्यु या पति की या पत्नी की मृत्यु होना, यह वह दुःख है जिन पर मनुष्य का वश नहीं होता, इन्हीं दुःखों को लोहे की बेड़ियां (अयस्मान बन्धपाश) तिग्मतेज कहा गया है। इस प्रकार के दुःख हमारे पूर्वजन्म के कर्मफल के कारण मिलते हैं। इसीलिए भक्त ईश्वर का धन्यवाद कर रहा है,

तूने मेरे पूर्वजन्म के कर्मों के बन्धन को काट दिया। किन्तु ईश्वर न्यायकारी, दयालु व कृपालु है तो वह इन दु:खों के साथ बुद्धिपूर्वक इनसे निकलने का रास्ता भी देता है। जैसे-प्रज्ञाचक्षु की स्पर्शशक्ति व स्मरणशक्ति अद्‌भुत होती है। अपंग व्यक्ति के दूसरे अंग में अधिक आ जाती है, दृढ़ इच्छाशक्ति से वह अपनी उस कमी को पूरा कर अच्छी तरह जीवन यापन कर लेता है। ऐसी ही विपदा का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण स्वामी विरजानन्द सरस्वती हैं। बचपन में छ: वर्ष की आयु में नेत्रों की ज्योति चेचक के कारण चली गई। फिर माता-पिता का साया भी उठ गया। बारह वर्ष की आयु में भाई-भाभी की प्रताड़ना सुन-सुनकर गृह त्याग कर दिया तथा ऋषिकेश आ गये। यहां विद्वान्, योगी, संन्यासियों की संगत में रहकर व्याकरण का ज्ञान प्राप्त किया। फिर मथुरा में बस गये। उनकी मृत्यु पर स्वामी दयानन्द जी ने कहा-''आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।''

2. आधिभौतिक विपदायें-यह दु:खों का वह प्रकार है जो हमें अन्य प्राणियों जीव-जन्तुओं से मिलता है। जैसे-सर्प, कुत्ता, बिच्छू के काटने से या किसी मनुष्य की हिंसक गतिविधि से, इन्हीं की निवृत्ति के लिए कहा गया है, **''ध्रुवादिग्वष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः''** सर्वव्यापक ईश्वर के विष्णुरूप की प्रार्थना की गई जो विद्वानों के माध्यम से उचित शिक्षा व ज्ञान प्राप्त करके दूर किए जा सकते हैं। जब हम दूसरों पर अन्याय करते हैं, जानवरों को मारते हैं, तब हमें उनके दु:खों का एहसास नहीं होता। दूसरे मनुष्यों का दिल दुखाने पर भी हमें उनके दु:खों का एहसास नहीं होता। जब वह पलटवार करते हैं, तब हमें लगता है, हमें इन कीट-पतंगों को हिंसाशील मनुष्यों ने दु:ख दिया है। यह हमारे वर्तमान जन्म के कर्मों का फल है।

3. आदिदैविक-यह विपत्तियाँ प्राकृतिक रूप से आती हैं। जैसे-अग्नि, वायु, अतिवृष्टि, भूकम्प, रेलदुर्घटनायें, वायुयान दुर्घटनायें, इन्हीं को तिग्मतेज अर्थात् भीषण आपदायें कहा गया है। ऐसी दुर्घटनाओं में जब अपने किसी सगे-सम्बन्धी के जीवन की हानि होती है या सम्पत्ति की हानि होती है तब हम ईश्वर को दोषी मान लेते हैं, किन्तु यदि देखा जाय तो कहीं न कहीं इनमें भी मनुष्य के अपने कर्म ही दोषी हैं। प्रकृति से खिलवाड़ करके आवश्यकता से अधिक निर्माण वृक्षों का काटना, रख-रखाव की कमी होती है, तभी ऐसी दुर्घटनायें अधिक होती हैं। हाँ, पचास प्रतिशत प्रकृति भी इसके लिए उत्तरदायी है। किन्तु इन विपत्तियों का सामना भी धैर्य व साहस के साथ किया जा सकता है। आज तक किसी भी दुर्घटना के बाद किसी का जीवन रुकता नहीं है। कुछ न कुछ रास्ता जरूर मिल जाता है। यह आपदायें भी मनुष्य को सबक सिखाने के लिए ही आती हैं। यदि मनुष्य इन पर विचार करे तो।

कहा गया है, 'यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे' ईश्वर ने मनुष्य को मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार देकर दिव्य शक्तिमान् बनाया है। हाँ, इतना अवश्य है कि ईश्वर सर्वज्ञ है और मनुष्य अल्पज्ञ है किन्तु सामर्थ्यवान् है। अपने मन में अभावों का विचार व पदार्थों की कमी को त्याग कर उद्यम, पुरुषार्थ, आशा व उत्साह के साथ परिस्थितियों का सामना करने पर बड़ी से बड़ी विपत्ति का सामना किया जा सकता है। वातावरण में असंख्य तत्त्व ऐसे हैं, जिनके द्वारा हमारे उद्देश्य की पूर्ति में सहायता मिलती है। हमारे चारों ओर वायुमण्डल में हमारी अपनी सोच, हमारे विचार, हमारे भाव रहते हैं। जिनसे हमें कार्य करने की वही शक्ति मिलती है जिसकी हमें उस समय आवश्यकता होती है। जब कोई मुसीबत आती है, तब वही हमारी सोच हमें संघर्ष करने की शक्ति देते हैं और पूरी तीव्रता के साथ हमारी गति को आगे बढ़ाते हैं।

इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण 3-4 वर्ष पूर्व गुजरात के समाचार-पत्र में पढ़ने को मिला, सच्ची घटना है। एक लड़की (नाम याद नहीं) को किसी कारणवश गुण्डों ने बाम्बे-सूरत रास्ते पर ट्रेन से नीचे फेंक दिया, वह गिरी तो उस ट्रेक से एक रेलगाड़ी गुजर रही थी उसकी एक टांग कट गई। बहुत हिम्मत करके घिसक-घिसक कर वह लड़की ट्रेक के किनारे आ गई। गांव वालों ने देखा तो उसको बम्बई के चिकित्सालय में पहुँचा दिया। उसके परिवार को सूचना दी गई किन्तु परिवार भी आर्थिक रूप से सक्षम नहीं था। किसी प्रकार किसी संस्था की मदद से उसके नकली टांग लगा दी गई। वह एक स्पोर्ट्स प्लेयर थी उसको टांग कटने का बहुत दु:ख था। एक दिन समाचार-पत्र में गुजरात के किसी विद्यालय का विज्ञापन पढ़ा जो पहाड़ पर चढ़ने की ट्रेनिंग देता था, उसने सम्पर्क किया, उसकी तीव्र इच्छा को देखकर वहां के संचालक ने उसे ट्रेनिंग देना स्वीकार कर लिया, तीन माह पश्चात् उसने हिमालय की किसी चोटी पर चढ़कर सफलता प्राप्त कर ली।

इसीलिये इस मन्त्र में विपत्ति आने पर भी ईश्वर को धन्यवाद देने की बात कही गई है। कहते हैं, भाग्य भरोसे बैठे रहने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता। मिलता है अपने कर्मों से, साहस से, पुरुषार्थ से, इसीलिये कहा गया है कि ईश्वर भी उन्हीं की सहायता करता है, जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। मन्त्र में विपत्तियों को नमन किया गया है। दोनों ही रास्ते लाभप्रद हैं। यदि पूर्वजन्म के कर्मों का परिणाम है तो बन्धन कट गये और हम मुक्त हो गये। यदि इसी जन्म के कर्म का फल है तब भी साहस व सकारात्मक सोच के साथ सामना करने पर ईश्वर यश, वैभव और अपने व्यक्तित्व की पहचान कराता है, समाज में स्थान दिलाता है। कहा गया है जब तक मनुष्य संघर्ष नहीं करता तब तक उसे अपनी दिव्य शक्ति की अनुभूति नहीं होती। इसीलिये हे विपत्तियों, बड़ी से बड़ी आपदाओं हम तुम्हें नमस्कार करते हैं, धन्यवाद देते हैं।

समाचार-प्रभाग

आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

आर्यसमाज अपने स्थापना काल से ही सामाजिक, रूढ़ियों, पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद पर कड़ा प्रहार करता रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप समाज में अनेक प्रकार के परिवर्तन करने को मिलते हैं।

आचार्य देवव्रत जी, महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश के मन में हमेशा से ही यह भाव रहा है कि गाँव, देहात में वेद का प्रारम्भिक प्रचार भजनोपदेशकों के माध्यम से जितना कारगर हो सकता है, उतना अन्य से नहीं। इस भावना को मन में रखते हुए गुरुकुल कुरुक्षेत्र में '**आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र**' की स्थापना की गई है। इस प्रशिक्षण केन्द्र पर विधिवत प्रशिक्षण **1 अप्रैल 2017** से प्रारम्भ हो चुका है। जो भी प्रशिक्षण प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति है, उसके आवास, प्रशिक्षण एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से निःशुल्क रहेगी। प्रशिक्षण के बाद गुरुकुल के माध्यम से ही उचित मानदेय पर अपनी सेवा भी प्रदान कर सकेंगे। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें—

—कुलवन्त सिंह सैनी, प्रधान गुरुकुल प्रबन्धकर्त्री समिति, मो० 9996026304

देश के आन्दोलनों में आर्यसमाज के भजनोपदेशकों की अहम् भूमिका रही

आर्यसमाज के भजनोपदेशकों ने देश की आजादी का आन्दोलन, हैदराबाद आन्दोलन, लोहारू आन्दोलन, गोरक्षा आन्दोलन, हिन्दी आन्दोलन, शराबबन्दी आन्दोलन आदि में आर्यसमाज के आदर्श भजन उपदेशकों ने प्रत्येक आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। अतीत के भजन उपदेशकों ने लोगों में अपने भजनों द्वारा राष्ट्रभक्ति की भावना भरी। अनपढ़ व्यक्ति भी भजन उपदेशकों के भजन सुनकर प्रत्येक आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया और जेलों में गए।

वैसे तो कांग्रेस के इतिहासकार पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है कि देश की आजादी में 80 प्रतिशत आर्यसमाजी थे जो जेलों में गए फांसी के फंदे चूमे। लेकिन आर्य भजन उपदेशकों की भी विशेष भूमिका रही। जिन भजन उपदेशकों ने आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया उनमें स्वामी भीष्म घरोंडा, चौ० पृथ्वीसिंह बेधड़क, स्वामी नित्यानन्द, न्योनन्द सिंह, पं० श्योनारायण, पं० चन्द्रभान, पं० शोभाराम प्रेमी, पं० ताराचन्द वैदिक तोप, पं० खेमचन्द, पं० हरिश्चन्द्र आर्य, चौ० बेगराज, चौ० नत्थासिंह, पं० मामचन्द पथिक, खेमसिंह, स्वामी रुद्रवेश, पं० विश्वामित्र आदि भजन उपदेशकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

—वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, नलवा जिला हिसार

यज्ञ व सत्संग का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक द्वारा वेदप्रचार अभियान के अन्तर्गत दिनांक 23 अप्रैल, 2017 को रात्रि 7 से 9 बजे तक कैलाश कालोनी रोहतक में सुन्दर आयोजन किया गया जिसमें अनेक कालोनीवासियों ने भाग लिया और वैदिक धर्म की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की। सबसे पहले यज्ञ किया गया। यज्ञब्रह्मा श्री सुरेन्द्र दहिया रिटायर्ड एसडीओ ने यज्ञ द्वारा होने वाले लाभ के बारे में विस्तार से बताया कि यज्ञ से पर्यावरण की शुद्धि होती है। संगतिकरण होने से समाज में प्रेमभाव बढ़ता है, मन को शान्ति मिलती है तथा मनुष्य स्वार्थ से छूटकर परमेश्वर की राह पर चलता है। इससे बच्चों में अच्छे संस्कार आते हैं। श्री सतनारायण शर्मा और श्री राजकुमार आर्य द्वारा ईश्वर की महिमा के भजनों द्वारा सबका मन मोह लिया। '**प्रभुभक्ति में मन को लगाले ओ बन्दे**' और '**जग में वेदों की निशानी रहे**' जैसे गीतों से सबको प्रभावित किया। श्री सुभाष आर्य ने बताया कि भगवान ने मनुष्यों को बुद्धि दी है और सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान पवित्र आत्माओं में दिया ताकि उसकी सन्तान जीवन को सर्वोत्तम तरीके से अपना जीवन जीए। ईश्वर का वेदज्ञान सबको जोड़ने वाला है। सबसे मैत्रीभाव से आचरण की शिक्षा देता है। जो आज के बिगड़े हालात को ठीक करने के लिए आवश्यक है। उन्होंने बताया कि पर्यावरण को शुद्ध करने, मन और आत्मा को पवित्र करने का जैसा सरल उपाय दूसरा नहीं है। अन्त में प्रेमनगर आर्यसमाज के प्रधान श्री कर्णसिंह आर्य ने सबका धन्यवाद किया और बताया कि वेदमार्ग पर चलने से ही सबका भला है।

—सुभाष सांगवान, रोहतक 9466258105

जो विवेक से सत्य-असत्य को जाना हो, उसमें से सत्य आचरण का ग्रहण और असत्य आचरण का त्याग करना 'वैराग्य' है।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से सम्बद्ध सभी आर्यसमाज के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि वर्ष 2016-17 का सभा को भेजा जाने वाला वेदप्रचार, दशांश एवं पत्रिका शुल्क की राशि आर्यसमाज के बैंक खाते से चैक/डी.डी./पेआर्डर द्वारा भेजें। कानूनी बाध्यता के कारण सभा नकद राशि स्वीकार नहीं करेगी। जिन आर्यसमाजों का बैंक में खाता नहीं है वे अपना बैंक खाता शीघ्र खुलवा लें। चैक **'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा'** रोहतक के नाम से दयानन्दमठ रोहतक के पते पर भेजें।

—आचार्य योगेन्द आर्य, सभामन्त्री

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुंच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ईएमओ (मनीआर्डर) के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आप सभी का सहयोग चाहती है।

व्यवस्थापक—'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक, दयानन्दमठ, रोहतक

स्थापना उत्सव

आर्यसमाज गोकर्ण मार्ग, रूपनगर रोहतक का स्थापना उत्सव ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया से ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया सम्वत् 2074 तदनुसार शुक्रवार 12 मई से रविवार 14 मई सन् 2017 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमें प्रो० ओमकुमार जी वैदिक प्रवक्ता जीन्द तथा श्रीमती श्रुति शास्त्री जी भजनोपदेशिका जयपुर से पधार रहे हैं।

कार्यक्रम-यज्ञ एवं भजन प्रात: 7-00 बजे से 9-30 बजे तक, वेदोपदेश प्रात: 9-30 बजे से 10-30 बजे तक, भजन रात्रि 7-30 बजे से 9-30 बजे तक, प्रवचन रात्रि 9-00 बजे से 10-00 बजे तक। निवेदक—**ब्र० सत्यकाम,** संरक्षक आर्यसमाज रूपनगर, रोहतक मो० 9466749993

रामनवमी पर्व सम्पन्न

आर्यसमाज रमेश नगर करनाल के प्रांगण में 'रामनवमी पर्व' आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के तत्त्वावधान में दिनांक 3.4.17 से 5.4.17 तक हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया जिसमें पं० वीरेन्द्र शास्त्री आर्योपदेशक सहारनपुर व पं० दिनेशदत्त भजनोपदेशक के प्रवचन एवं भजन हुए। -**अमरसिंह आर्य**

आवश्यक सूचना

आर्य भजनोपदेशकों पर एक पुस्तक तैयार की जा रही है। भजनोपदेशक प्राचीन या नवीन दोनों प्रकार के हो सकते हैं। आप या आपसे संबंधित आर्य भजनोपदेशकों का जीवन परिचय एवं कार्यों का संक्षिप्त विवरण लिखकर निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें—

भेजने का पता—

डॉ० बलवीर शास्त्री, M-14, इन्द्रप्रस्थ कालोनी, सोनीपत रोड, रोहतक 09416763713

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनांक 19-20 मार्च 2017 को आर्यसमाज भाऊ आर्यपुर रोहतक का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। आचार्य वेदमित्र जी के ब्रह्मत्व में 30 यजमान दम्पतियों ने श्रद्धा से यज्ञ सम्पन्न किया। आर्यजगत् की भजनोपदेशिका रेखा आर्या मथुरा व श्री ओमवीर आर्य के मधुर भजन-उपदेश हुए। श्री रोहताश जी आर्य ने मंच का संचालन किया। यज्ञ व रात्रि को वेदप्रचार में किया। वेदप्रचार में काफी उपस्थिति रही। कार्यक्रम बहुत ही आकर्षक रहा।

चरित्र-निर्माण शिविर

आर्यवीर दल, रोहतक के तत्त्वावधान में ग्रीष्मकालीन अवकाश में चरित्र-निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम का युवाओं का प्रशिक्षण शिविर दिनांक 5 जून से 11 जून, 2017 तक बलिदान भवन, दयानन्दमठ, रोहतक में आयोजित किया जा रहा है। —**देशराज आर्य, मो० 9215212533**

आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक को योग्य, विद्वान्, उपदेशक, भजनोपदेशक एवं व्यायाम शिक्षक की शीघ्र आवश्यकता है। इच्छुक अभ्यार्थी शीघ्र ही कार्यालय में आवेदन करें।

सम्पर्क-आचार्य कर्मवीर मेधार्थी, मो० 8199982222

पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न

दिनांक 10.4.2017 को हिसार में वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष रामकुमार आर्य द्वारा प्रिंसिपल सत्यव्रत, प्रिंसिपल एस.डी. वर्मा, भगवानदास आर्य, संजय कुमार आर्य के घर में पारिवारिक यज्ञ किया गया। उन्होंने गायत्री मन्त्र की सरल शब्दों में व्याख्या की तथा घरों में पारिवारिक यज्ञ करने का सुझाव दिया।

विचारगोष्ठी का आयोजन

दिनांक 12.4.17 श्रीकुल गोशाला निमड़ीवाली में विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, शेरसिंह आर्य, पं० शकुन्तला आर्या तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। स्नेही जी ने संगठित होकर वेदप्रचार के कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का सुझाव दिया तथा गऊओं की नस्ल सुधारने पर बल दिया।

शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि समारोह सम्पन्न

जिला भिवानी के ग्राम फतेहगढ़ के पूर्व सरपंच पेतावास गोशाला के प्रधान, शराबबन्दी समिति के जिला अध्यक्ष प्रिं० बलवीरसिंह का निधन हो गया। दु:खद समाचार सुनकर गाँव व आस-पास के क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई। 13 अप्रैल को शान्ति यज्ञ व श्रद्धांजलि समारोह किया गया। क्षेत्र के काफी लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, शेरसिंह जी आर्य, एम.ए., डॉ. कुलदीप सांगवान, झोझू गाँव के सरपंच दलबीर गांधी तथा सांगवान खाप के प्रमुख चरखी के प्रतिष्ठित लोगों ने श्रद्धांजलि दी। उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लिया।

कृपया आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पुस्तकालय से निम्नलिखित पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं—

1. आर्य पथिक पण्डित लेखराम जीवन चरित्र
2. मन की अद्‌भुत शक्तियाँ, स्वरूप एवं सम्मोहन
3. आप सफल कैसे हों ?
4. हँसते-हँसते कैसे जीयें ?
5. गान्धी वध क्यों ?
6. मानव जीवन की ज्वलन्त समस्या
7. वन्दा वीर वैरागी
8. भारत का एक ऋषि
9. भारतीय देशभक्तों की कारावास और बलिदान की कहानी
10. अध्यात्म रोगों की चिकित्सा

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

भिवानी अनाजमण्डी में बलदीप मण्डल सुपरवाइजर के क्वार्टर में वेदप्रचार का कार्यक्रम किया गया। इस अवसर पर महात्मा अत्तरसिंह स्नेही, डॉ. कुलदीप आर्य, मा. रणदीप आर्य, शमशेरसिंह मंडोली, किताबो देवी, सरबती देवी, सीमा, सुशीला आदि ने भाग लिया। स्नेही जी ने महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। सन्ध्या व हवन को जीवन से जोड़ने का सुझाव दिया।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मंत्री वेदप्रचार मण्डल, हिसार

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज जवाहर कालोनी (फरीदाबाद)	6 से 7 मई 2017
2.	आर्यसमाज सिहोर (महेन्द्रगढ़)	13 से 14 मई 2017
3.	आर्यसमाज भुरथला (रेवाड़ी)	13 से 14 मई 2017
4.	आर्यसमाज बालधन कलां (रेवाड़ी)	15 से 16 मई 2017
5.	आर्यसमाज जाडरा (रेवाड़ी)	27 से 28 मई 2017
6.	भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, जसात (गुड़गांव)	28 मई से 4 जून 2017
7.	आर्यसमाज कनीना (महेन्द्रगढ़)	17 से 18 जून 2017

—आचार्य कर्मवीर, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं। —प्रबन्धक

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक समाचार-पत्र की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।

सम्पर्क—01262-216222, मो० 08901387993

गुणों के कारण हमारे संस्कार परिवर्तित होते हैं और संस्कारों के कारण गुण भी प्रभावित होते हैं।

गुजरात में शराब पर प्रतिबंध तो हरियाणा में क्यों नहीं

ठेका नहीं हटाने पर भड़के सेक्टर-11 के लोग, महिलाएं व पुरुष धरने पर बैठे, मांग न मानने पर आंदोलन की चेतावनी दी

जागरण संवाददाता, पानीपत : सेक्टर 11 की मार्केट से शराब ठेका हटवाने के लिए महिलाओं और पुरुषों ने धरना दिया। लोगों ने पहले भी विरोध किया था। ठेका एल मार्केट में शिफ्ट करने की मांग की। ठेकेदार ने धरनास्थल पर लोगों से बातचीत की और कहा कि पहले एल मार्केट में ठेका खोलना था, लेकिन दुकानदारों ने विरोध किया था। इसलिए मार्केट में ठेका खोलना पड़ा। एक घंटे की बातचीत में सहमति नहीं बनी। लोगों ने ठेका न हटने तक रोजाना धरना देने की चेतावनी दी है।

एंजल मॉल के पास 11 अप्रैल को ठेका खोला था। अगले दिन बुधवार को महिलाओं ने ठेका बंद कराने के लिए प्रदर्शन किया था। ठेका शिफ्ट करने के आश्वासन के बाद लोग शांत हुए, लेकिन ठेकेदार ने शिफ्ट नहीं किया। इससे नाराज महिलाएं और पुरुष शुक्रवार दोपहर 12 बजे ठेके के पास पहुंचीं और धरने पर बैठ गए। लक्ष्मी कालड़ा ने कहा कि मार्केट के सामने स्कूल बसें खड़ी होती हैं। महिलाएं अपने बच्चों को स्कूल छोड़ने आती हैं। सड़क के किनारे शराब ठेके का बोर्ड लगा हुआ है। मार्केट में ठेका खोलने से दिक्कत हो रही है। मीना मित्तल ने कहा कि गुजरात में शराब पर प्रतिबंध है तो हरियाणा में क्यों नहीं बंद की जा रही? मार्केट के साथ रिहायशी एरिया है। ठेके के पीछे को अहाता खोलने की तैयारी की जा रही है। शराबी सारा दिन सड़कों पर घूमते रहेंगे। ठेका आबादी से दूर शिफ्ट किया जाए।

सेक्टर-11 में शराब ठेके के विरोध में धरने पर बैठे लोग। बाद में इन लोगों ने सेक्टर 12 स्थित शहर विधायक रोहिता रेवड़ी के निवास पर पहुंचकर विरोध जताया। • जागरण

आश्वासन के बाद भी शिफ्ट नहीं किया

पूर्व मेयर भूपेंद्र सिंह ने कहा कि ठेकेदार ने दो दिन में ठेका शिफ्ट करने का आश्वासन दिया था, लेकिन शिफ्ट नहीं किया। सेक्टर वासी ठेका शिफ्ट होने तक हर रोज सुबह 11 से दोपहर एक बजे तक शांतिपूर्वक धरना देंगे। ओमप्रकाश ने कहा कि मार्केट के सामने पार्क है। महिलाएं और बच्चे सुबह शाम पार्क में सैर करने जाते हैं। ठेका खुलने से पार्क में जाना बंद हो गया है। इस कारण लोग परेशान हैं। जिला प्रशासन को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

विधायक नहीं आई

अनिला ने कहा कि मार्केट में लड़कियों और महिलाएं सामान लेने आती हैं। ठेका होने की वजह से सामान खरीदना मुश्किल हो गया है। ठेका बंद कराने के लिए सेक्टरवासी शहरी विधायक रोहिता रेवड़ी की कोठी पर गए। विधायक वहां नहीं थी। लोगों ने कहा कि ठेका बंद कराने के लिए शहरी विधायक रोहिता रेवड़ी को फोन किया था, फिर भी नहीं आई। वोट लेने के लिए अपने आप आई थी। अब बुलाने के बाद भी नहीं आ रही।

ठेका बंद कराने की मांग

मॉडल टाउन टेलीफोन एक्सचेंज के साथ ठेका खुला हुआ है। शुक्रवार सुबह महिलाएं ठेका बंद कराने पहुंची। ठेकेदार ने पुलिस को सूचना किया। कुछ देर बाद मॉडल टाउन पुलिस मौके पर पहुंची। इसके बाद महिलाएं वापस चली गई। बता दें कि धूपसिंह, हरी सिंह कालोनी, पुरेवाल कालोनी, सलारजंग गेट, सेक्टर 13-17 व राजीव कालोनी सहित काफी जगहों पर विरोध हो चुका है। लोग रिहायशी एरिया में ठेका खोलने का विरोध कर रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी उठाई शराबबंदी की मांग

आचार्य योगेंद्र आर्य।

जागरण संवाददाता, पानीपत : आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल में आर्य समाज कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। इसमें सभी ने एकमत होकर प्रदेश में शराबबंदी की मांग की।

आर्य समाज कार्यकर्ताओं की बैठक में आचार्य योगेंद्र आर्य ने कहा कि विभिन्न रिहायशी क्षेत्रों में खुल रहे शराब ठेकों का महिलाओं द्वारा विरोध किया जा रहा है। इससे संकेत मिलता है कि अब लोग जागरूक हो गए हैं और शराब को ही सामाजिक बुराइयों की जड़ मान रहे हैं। इसलिए प्रदेश में शराबबंदी की जानी चाहिए। उन्होंने राजनेताओं के उस तर्क को हास्यास्पद बताया जिसमें शराबबंदी से राजस्व में घाटा होने की बात कही गई है। यदि शराब से होने वाली हानि पर नजर डाली जाए तो शराब बिक्री से लाभ की बात पूर्ण रूप से औचित्यहीन मिलेगी।

शराब से ये होता है नुकसान

आर्य प्रतिनिधि सभा के पुस्तकालयाध्यक्ष आचार्य आजाद आर्य ने कहा कि शराब से समाज में सड़क दुर्घटना, घरेलू हिंसा, आपसी विवाद जैसी घटनाएं सामने आ रही हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा लोगों को इस बुराई के विरुद्ध जागरूक कर रही है।

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल में आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से शराब बंदी पर बात करते हरियाणा के मंत्री आचार्य योगेन्द्र आर्य।

शराब सब पापों की जननी : योगेंद्र

पानीपत। आर्य बाल भारती विद्यालय में आर्य प्रतिनिधि सभा की एक बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री योगेंद्र आर्य ने की। उन्होंने महिलाओं के जगह-जगह शराब के ठेकों का विरोध करने को उचित ठहराया। कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महिलाएं इसी प्रकार शराब की दुकानों का विरोध करती थीं। दुर्भाग्य है कि आजाद भारत में भी उन्हें यह लड़ाई लड़नी पड़ रही है। उन्होंने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा महिलाओं की इस मुहिम का पूरा समर्थन करती है। हरियाणा सरकार से पूरे राज्य में पूर्ण रूप से शराबबंदी की मांग करती है। उन्होंने कहा शराब सब पापों की जननी है और जीवन को नष्ट करने वाली है। इस अवसर पर सभा के वेद, आचार्य कर्मवीर और सभा पुस्तकालय अध्यक्ष आचार्य आजाद सिंह आर्य भी मौजूद रहे।

नशे के खिलाफ प्रदेशभर में अभियान चलाएगी आर्य प्रतिनिधि सभा : योगेंद्र आर्य

पानीपत (बिजेंद्र) : आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मंत्री एवं गौशाला संघ के प्रदेश अध्यक्ष आचार्य योगेंद्र आर्य ने कहा कि आज देश व हरियाणा प्रदेश में अनेको युवाओं को नशे की लत ने बर्बादी की कगार पर पहुंचा दिया है और जिस देश का युवा नशे की दलदल में फंसा होगा तो वह देश कभी तरक्की नहीं कर सकता। इसलिए युवाओं को नशे की दलदल से बाहर निकालने और बाकि बचे युवा नशे से दूर रहे, को लेकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा प्रदेशभर में नशे के खिलाफ अभियान चलाया जाएगा। जिसमें आर्य सभा के पदाधिकारी व सदस्य गांवों-गांवों जाकर लोगों को जहां नशे के खिलाफ जागृत करने का काम करेंगे वहीं नशे से होने वाली भारी हानियों को लेकर भी उन्हें बताया जाएगा। आचार्य योगेंद्र आर्य आज आर्य बाल भारती स्कूल में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। वहीं नशे के खिलाफ चलाए जाने वाले अभियान में स्कूल व कालेजों में जाकर भी युवाओं को जागरूक किया जाएगा। इस मौके पर गौशाला संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष आचार्य आजाद सिंह आर्य ने कहा कि निरंतर बढ़ रही नशे की प्रवृति के चलते अपराध बढ़े है। क्योंकि नशा करने के उपरांत व्यक्ति की संवेदना समाप्त हो जाती है। वहीं आजाद सिंह आर्य ने कहा कि हरियाणा प्रदेश में भी गुजरात की तर्ज पर शराब की बिक्री पर रोक लगानी चाहिए। आर्य ने कहा कि जब गुजरात में शराबबंदी हो सकती है तो हरियाणा में क्यों नही हो सकती। इसलिए सरकार को चाहिए कि वह प्रदेश में शराबबंदी की और ठोस कदम उठाए। इस अवसर पर आचार्य अभय आर्य, राजकुमार शास्त्री, संदीप आर्य, जगदीश आर्य, जितेंद्र आर्य, प्रदीप भापरा आदि मौजूद थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी उठाई शराबबंदी की मांग

जागरण संवाददाता, पानीपत : आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल में आर्य समाज कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। इसमें सभी ने एकमत होकर प्रदेश में शराबबंदी की मांग की।

आर्य समाज कार्यकर्ताओं की बैठक ...

महिलाओं द्वारा विरोध किया जा रहा है। इससे संकेत मिलता है कि अब लोग जागरूक हो गए हैं और शराब को ही सामाजिक बुराइयों की जड़ मान रहे हैं। इसलिए प्रदेश में शराबबंदी की जानी चाहिए। उन्होंने राजनेताओं के उस तर्क को हास्यास्पद बताया जिसमें शराबबंदी से राजस्व में घाटा होने की बात कही गई है। यदि शराब से होने वाली हानि पर नजर डाली जाए तो शराब बिक्री से लाभ की बात पूर्ण रूप से औचित्यहीन मिलेगी।

शराब से ये होता है नुकसान

आर्य प्रतिनिधि सभा के पुस्तकालयाध्यक्ष आचार्य आजाद आर्य ने कहा कि शराब से समाज में सड़क दुर्घटना, घरेलू हिंसा, आपसी विवाद जैसी घटनाएं सामने आ रही हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा लोगों को इस बुराई के विरुद्ध जागरूक कर रही है।

सराहनीय पहल

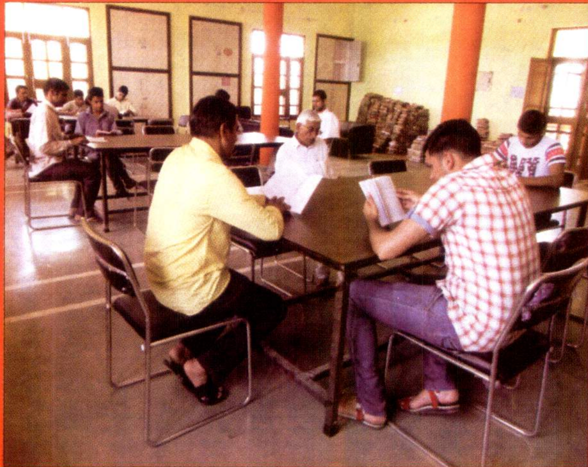

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पुस्तकालय को भव्य रुप देने व वैदिक साहित्य बिक्री केन्द्र स्थापित करने पर लगभग 35 लाख रुपये व्यय करके अति आधुनिक पुस्तकालय बनाने से सभा के कदम चहुंमुखी विकास की ओर अग्रसर।

Postal Regn. - RTK/010/2017-19

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक आचार्य योगेन्द्र आर्य ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ति भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक आचार्य योगेन्द्र आर्य